भजनावली

बॉईज़ टॉउन पब्लिक स्कूल, नासिक

पी. एन्. मेहता एज्युकेशन ट्रस्ट

अर्पण पत्रिका

स्व. सेठ श्री. पिरोजशा नसरवानजी मेहता जिन्होने बॉइज् टाऊन का निर्माण करके देशके शिक्षणकार्य में सहयोग दिया और इस संस्थामें बालकों को शिक्षण प्रदान कर उच्च नागरिक बनानेमें सहकार दिया उन्हे हम श्रध्दापूर्वक यह ''बालकनगर भजनावली'' अर्पण करते हैं।

- अनुक्रमणिका -

	शिर्षक	पृष्ठ
१.	आर्ष प्रार्थना	१२
२.	प्रात: और सायंकाल की प्रार्थनाएँ	१६
३.	शान्तिमंत्र	१७
४.	देवी कवच	१८
५.	देवी की प्रार्थना	२६
६.	देवी स्तवन	२८
७.	श्रीराम स्तवन	२९
८.	शान्ति - पाठ	३०
९.	सूर्य नमस्कार	३१
१०.	गायत्री स्तवन	३२
११.	गायत्री मंत्र	३३
१२.	संकटनाशनं गणेशस्तोत्र	३४
१३.	जरथोस्ती गाथा	३६
१४.	UP WITH YOUR FEET !	३७
१५.	अषेम् वोहू	३८

१६.	अहुनवर (यथा अहू वइर्यो)	३९
१७.	येङहे हातॉम्	४०
१८.	केरफेह मोज़्द्	४१
१९.	अष वहिश्त	४२
२०.	वीस्प हूमत	४३
२१.	अत् तोइ आतरेम्	४४
२२.	जैन महामंत्र	४५
२३.	शीख प्रार्थना	४६
२४.	स्वामी नारायण प्रार्थना	४७
२५.	स्वामी नारायण प्रार्थना	४८
२६.	कुरानसे प्रार्थना	४९
२७.	AL HAMDULILLAH	५१
२८.	सूरत - ई - इखलास	५२
२९.	दुआये नूर	५३
३०.	दुआए जमीलह	५४
३१.	दुआए बूज़ुर्गवार	५८
३२.	चलो मन गंगा जमुना तीर	५९
३३.	मंगल मंदिर खोलो	६०

३४.	तुम मेरी राखो लाज हरी।	६१
३५.	जय जगदीश हरे।	६२
३६.	ठाकुर तुम शरणाई आयो।	६३
३७.	अखियाँ हरी - दर्शनकी प्यासी	६४
३८.	निर्धन के धन	६५
३९.	घूँघटका पट खोल रे। तोको पीव मिलेंगे।	६६
४०.	मन लागो मेरो यार फकीरीमे।	६७
४१.	भजो रे भैया राम गोविंद हरी।	६८
४२.	संतन के संग लाग	६९
४३.	मत कर मोह तू, हरि-भजनको मान रे	७०
४४.	तू तो राम सुमर	७२
४५.	रहना नहिं देश बिराना है।	७३
४६.	मोहे कहाँ तू -	७४
४७.	जन्म जन्मके सोये अभागी	७५
४८.	जीवन के दिन चार	७६
४९.	विदूर घर जाये	७७
५०.	जानकीनाथ सहाय करे जब।	७८
५१.	रघुवर। तुमको को मेरी लाज।	७९

५२.	नाम जपन क्यों छोड दिया ?	८०
५३.	प्रभुजी। तुम चंदन हम पानी।	८१
५४.	माई मैंने गोविंद लीनो मोल।	८२
५५.	मोरी लागी लटक गुरु - चरननकी।	८३
५६.	मुझे लगन लगी	८४
५७.	उठ जाग मुसाफिर भोर भई	८५
५८.	गोपाला मेरी करुणा क्यों नहीं आवे।	८६
५९.	नहीं रे विसारुं हरि, अंतरमांथी	८७
६०.	पायो जी मैने राम - रतन धन पायो	८८
६१.	अगर है शोक मिलनेका	८९
६२.	दुआ - १	९०
६३.	दुआ - २	९२
६४.	जानकी नाथ सहाय	९३
६५.	दया कर दान भक्तिका	९४
६६.	तुम्ही हो माता	९५
६७.	श्रीराम स्तवन	९६
६८.	इस तनमें	९७
६९.	राम-नाम-रस पीजै	९९

७०. प्रकृति से शिक्षा १००
७१. तुम मेरे स्वामी १०१
७२. ऐ मालिक १०२
७३. नित्य सबेरे १०४
७४. ॐ तत्सत् श्री १०५
७५. एक ज दे चिनगारी, महानल। १०६
७६. जीभलडी रे, १०७
७७. वैष्णव जन तो तेने कहीये, १०८
७८. स्वर्गीय शेठ 'पीरोजशा' की स्मृतिमें १०९
७९. हरिनो मारग छे शूरानो, १११
८०. बस, अब मेरे दिलमें ११२
८१. ईश्वर स्तवन ११३
८२. जरथोस्ती तो तेने कहिए ११५
८३. जे गमे जगत-गुरु देव जगदीशने ११७
८४. प्रभु तने प्रसन्न ते केम थाय ? ११९
८५. ज्यां लगी आत्म-तत्त्व चीन्यो नहि। १२१
८६. दिलमां दीवो करो, १२३
८७. अखिल ब्रह्मांडमां एक तुं श्रीहरि १२४
८८. बोल मा, बोल मा, बोल मा, रे। १२५

८९. एकल तुं दादार १२६
९०. दीनानाथ दयाळ नटवर। हाथ मारो मूकशो मा १२७
९१. रुडी सवार सज थजो १२८
९२. भजी ले ने किरतार १२९
९३. म्हारे घर आवो १३१
९४. अंतर मम जागो रे १३२
९५. तुमि बंधु, तुमि नाथ १३३
९६. देह जावो अथवा राहो १३४
९७. नाहीं संतपण मिळत तें हाटीं १३५
९८. पुण्य पर - उपकार, पाप ते पर-पीडा १३६
९९. अन्तर मम विकसित करो १३७
१००. अशो जरथोश्तनी स्तूति १३८
१०१. THE ROYAL CULT OF RAJ YOGA १३९
१०२. MY CREDO १४५
१०३. I BELIEVE १४६
१०४. A PRAYER (1) १४६
१०५. A PRAYER (2) १४८
१०६. सारे जहाँसे अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा १५०
१०७. देश हमारा १५२

- प्रस्तावना -

(भजनावली प्रस्तावना सातवें संस्करण के लिए)

बालक-नगर भजनावली का यह सातवां और सुधारित संस्करण प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यानंद हो रहा है।

बालक-नगर की प्रतिदिनकी प्रवृत्तियोंका प्रात: व सायं सर्व धर्मोकी सामूहिक प्रार्थना एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। प्रथमत: प्रार्थनाओंकी जानकारी तथा शब्दोंके शुध्द उच्चारण के हेतु अल्पसे प्रयास के रुपमें इस बालक-नगर 'भजनावली' का सन १९६९ में बीजारोपण हुआ.

हमारा यह अल्पसा प्रयास छात्रों में तो अत्यंत प्रिय हुआ परंतु धीरे धीरे छात्रों के घरों में तथा महाराष्ट्र के मान्यवर विद्वानों के दिलोंमें व हमारे यहाँ समय समयपर आनेवाले मान्यवर अतिथियों के दिलों में घर कर गया। सभी शिक्षण संस्थाओ के पदाधिकारियोंने इस भजनावली मे केवल रुचि ही नहीं ली तो इसकी भूरि भूरि प्रशंसाभी की .

परिणामत: ८३-८४ में प्रकाशित भजनावली का अव्य संस्करण भी पहले संस्करण से अत्यंत लोगप्रिय होकर अल्पावकाशमें छात्रों तथा प्रिय जनोंमें हाथो हाथ वितरित हो गया।

आज हमें नागरी लिपिमें मुद्रित इस भजनावली का सातवां संस्करण प्रस्तुत करने में विषेश आंनद हो रहा है। इस नये संस्करण में पहले के संस्करणों के अत्यंत भावपूर्ण व भक्ति रस से भरे भजन तो है ही परंतु इसका प्रसार व लोगप्रियता को ध्यानमें रखकर और अन्य सर्व धर्म के मान्यवर व प्रिय भजन संम्मिलित किये है। इस नये संस्करण के संकलन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है हमारे भूतपूर्व संस्कृत/हिन्दी शिक्षक श्री. शांतिलालजी मेहता ने व सजावट का कार्य किया हैं सद्. श्री. बी. एन. नाकीलजी ने. बालक नगर भजनावली का प्रकाशन विभाग इन सहयोगियों का अत्यंत ऋणी है।

हमें आशा है कि बालक नगर भजनावली का यह चौथा संस्करण भी पहले के संस्करणों की तरह पाठशालाओं के छात्र तथा मान्यवर विद्वज्जनों में लोगप्रिय होगा। पाठकगण इस पुस्तिका का समुचित उपयोग कर हमारे प्रयासों को सफल बनाने में सहयोग देंगे।

धन्यवाद

बालकनगर। **बेजन. न. देसाई**

(बॉईज टाऊन) विश्वस्त

नाशिक।

आर्ष प्रार्थना

गायत्री मंत्र

ॐ भू र्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य

धीमही धियोयोनः प्रचोदयात्।

नैदं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

इस जीवात्माको शस्त्र छेद नही सकते, अग्नि इसे जलाता नही, पानी भिगा नही सकता तथा पवन सुखा नही सकता।

ॐ असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योतिर्

गमय। मृत्योर् माऽमृतं गमय॥

(हे प्रभो!) मुझें असत्यसे सत्य में ले जा, अंधेरेसे उजालेमें ले जा; मृत्युसे अमरता में ले जा।

ॐ सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवाव है । तेजस्वि नावधितम् अस्तु । मा विद्विषावहै । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

वह (परमात्मा) हम दोनों की रक्षा करें । हम दोनो का उपयोग करे । हम दोनो (गुरु-शिष्य) एकसाथ पुरुषार्थ करें। हमारी विद्या तेजस्वी हो । हम एक दुसरे का द्वेष न करें । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

गुरुर्ब्रम्हा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वराः ।

गुरुः साक्षात् परब्रम्हः तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

गुरु ही ब्रम्हा है, गुरु ही विष्णु है, गुरु ही महादेव है; गुरु साक्षात् परब्रम्ह है; उन श्रीगुरु को मै नमस्कार करता हूँ ।

शान्ताकारं भुजग-शयनं पद्मनाभं सुरेशम्

विश्वाधारं गगन-सदृशं मेघ-वर्णं शुभाङ्गम् ।

लक्ष्मीकान्तं कमल-नयनं योगिभिर् ध्यान-गम्यम्

वन्दे विष्णुं भव-भय-हरं सर्व लोकैक-नाथम् ॥

संसार के भयका नाश करनेवाले, सब लोकों के एक-मात्र स्वामि श्री विष्णुको मैं नमस्कार करता हूँ । उनका आकार शान्त है, वे शेषनाग पर लेटे हैं; उनकी नाभिसे कमल उत्पन्न हुआ हैं, वे सब देवोंके स्वामी हैं, वे सारे विश्वके आधार हैं; वे आकाश की तरह अलिप्त हैं; ओर उनका वर्ण मेघ की तरह श्याम है, वे कल्याणकारी गात्रवाले हैं; संब सम्पत्तिके स्वामी हैं, उनके नेत्र कमल के समान हैं । योगी उन्हे ध्यान द्वारा ही जान सकते है ।

यं ब्रम्हा-वरुणेन्द्र-रुद्र-मरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैर्

वेदैः सांग-पद-क्रमोपनिषदैर् गायन्ति यं सामगाः ।

ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो

यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥

ब्रम्हा, वरुण, इन्द्र, रुद्र और मरुत दिव्य स्तोत्रोंसे जिसकी स्तुति करतें हैं, सामवेदका गान करनेवाले मुनि अंग, पद, क्रम और उपनिषद् के साथ वेदमंत्रोसे जिस की स्तुति करते हैं, योगीजन समाधि लगाकर परमात्मामें लीन मन द्वारा जिस के दर्शन करते हैं; और देवता और दैत्य जिस की महिमा का पार नही पाते उस परमात्माको मै नमस्कार करता हूँ।

विपदो नैव विपदः संपदो नैव संपदः।

विपद् विस्मरण विष्णोः संपन् नारायण-स्मृतिः॥

विपत्तियाँ सच्ची विपत्ति नही, और धनदौलत सच्ची सम्पत्ति नही। विष्णुका विस्मरण ही विपत्ति है और नारायणका स्मरण ही सम्पत्ति है।

प्रातः और सायंकाल की प्रार्थनाएँ

(संस्कृतमें)

नमस्ते सते ते जगत्कारणाय,
नमस्ते चिते सर्व लोकाश्रयाय,
नमोऽद्वैततत्वाय मुक्तिप्रदाय,
नमो ब्रम्हणे व्यापिने शाश्वताय ॥१॥

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं
त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम्
त्वमेकं जगत्कर्तृ पार्तृ प्रहर्तृ
त्वमेकं पर निश्चलं निर्विकल्पम् ॥२॥

भयानां भयं भीषणं भीषणानां,
गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम्,
महोचैः पदानां नियन्तृं त्वमेकं,
परेशां परं रक्षणं रक्षणानाम् ॥३॥

वयं त्वां स्वरामो वयं त्वा भजामो,
वयं त्वां जगत्साक्षिरुपं नमामः,
सदेकं निधानं निरालम्बमीशं,
भवाम्भोधिपोतं शरण्यं व्रजामः ॥४॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव,
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥५॥

शान्तिमंत्र

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ॐ शान्तिः पृथ्वी
शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्बम्ह शान्तिः
सर्व ॐ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः, सामा शान्तिरेधि ।

देवी कवच

ॐ अस्य श्री चंडीकवचस्य ब्रम्हा ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, चामुंडा देवता, अंगन्यासोक्तमातरों बीज, दिग्बंधदेवतास्तत्वं, श्री जगदंबाप्रीत्यर्थे विनियोगः

ॐ मार्कण्डेय उवाच

ॐ यद् गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्,
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे बृहि पितामह ॥१॥

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्व भूतोपकारकम् ।
देवास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥२॥
प्रथमं शैलपुत्रीति द्वितीयं ब्रम्हचारिणी ।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥३॥

पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रिश्च महागौरीति चाष्टमम् ॥४॥
नवमं सिद्धिदात्री च नव दुर्गा: प्रकीर्तिता:।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रम्हणैव महात्मना ॥५॥
अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ता: शरणंगता: ॥६॥
न तेषां जायते किंचिदशुभं रणसंकटे।
नापदं तस्य पश्यामि शोक दु:खभयं नहि ॥७॥
यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां सिध्दि: प्रजायते।
प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना ॥८॥
ऐन्द्री गजसमारुढा वैष्णवी गरुडासना।
माहेश्वरी वृषारुढा कौमारी शिखिवाहना ॥९॥
ब्राम्ही हंसशमारुढा सर्वाभरणभूषिता।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिता ॥१०॥

दृश्यन्ते रथमारुढा देव्य: कोधसमाकुला:।
शंखं चक्रं गदां शक्ति हलं च मुसलायूधम् ॥११॥
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च।
कुन्तायुधं त्रिशुलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ॥१२॥
दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयायच।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानांच हिताय वै ॥१३॥
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनी।
त्राहि मां देवी दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनी ॥१४॥
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्नि देवता।
दक्षिणेऽवस्तु वाराही नैऋत्यां खड्गधारिणी ॥१५॥
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद्वायव्यां मृगवाहिनी।
उदीच्यां रक्ष कौबेरी ईशान्यां शूलधारिणी ॥१६॥
ऊर्ध्व ब्रम्हाणी में रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी तथा।
एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना ॥१७॥

जया मे अग्रतः स्थातु विजया स्थातु पृष्ठतः ।
अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता ॥१८॥
शिखां मे द्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ।
मालाधरी ललाटेच भ्रुवौ रक्षेद्यशास्विनी ॥१९॥
त्रिनेत्राच भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ।
शंखिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी ॥२०॥
कपोलौ कालिका रक्षेत् कर्णमूले तु शांकरी ।
नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठेच चर्चिका ॥२१॥
अधरे चामृतकला जिव्हायां च सरस्वती ।
दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठमध्ये तु चण्डिका ॥२२॥
धाष्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ।
कामाक्षी चिबुकं रक्षेद्वाचं मे सर्व मंगला ॥२३॥
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी ।
नीलग्रीवा बहिः कण्ठे नलिकां नलकूबरी ॥२४॥

खड्गधारिण्युभौ स्कंधौ बाहू मे वज्रधारिणी ।
हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चांगुलीस्तथा ॥२५॥
नखत्च्छूलेश्वरी रक्षेत् कुक्षौ रक्षेन्नलेश्वरी ।
स्तनौ रक्षेन्महालक्ष्मीर्मनः शोक विनाशिनी ॥२६॥
हृदयं ललितादेवी उदरं शूलधारिणी ।
नाभौं च कामिनी रक्षेत् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ॥२७॥
कट्यां भगवती रक्षेत् जानुनी विन्ध्यवासिनी ।
भूतनाथा च मेढ्रं मे ऊरु महिषवाहिनी ॥२८॥
जंधे महाबला प्रोक्ता सर्व कामप्रदायिनी ।
गुल्फयोर्नारसिंहीच पादौं चामिततेजसी ॥२९॥
पादांगुलिः श्रीर्मे रक्षेत् पादाधस्तलवासिनी ।
नखान्द्रंष्ट्राः कराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी ॥३०॥
रोमकू पेषु कौबैरी त्वचं वागीश्वरी तथा ।
रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती ॥३१॥

अन्त्राणि कालरात्रिश्च पितं च मुकुटेश्वरी।
पद्मावती पद्मकोशे कफे चूंडामणि स्तथा ॥३२॥
ज्वालामुखी नखज्वाला अभेद्या सर्वसंधिषु।
शुक्रं ब्रम्हाणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा ॥३३॥
अहंकारं मनो बुध्दिं रक्ष में धर्मचारिणी।
प्राणापानौ तथा व्यानं समानोंदानमे व च ॥३४॥
यश: कीर्ति च लक्ष्मी च सदा रक्षतु वैष्णवी।
गोत्रमिद्राणी मे रक्षेत् पशुन्मे रक्ष चण्डिके ॥३५॥
पुत्रान्नक्षेन्महालक्ष्मीर्भायां रक्षतु भैरवी।
मार्ग क्षेंमकरी रक्षेत् विजया सर्वत: स्थिता ॥३६॥
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जिनं कवचेन तु।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी ॥३७॥
पदमेकं न गच्छेतु यदीच्छेछुभमात्मन।
कवचेनावृत्तो नित्यं यत्र यत्राधिगच्छति ॥३८॥

तत्र तत्रार्थलाभश्च विजय: सर्व कामिक:।
यं यं कामयते कामं तं तं प्रान्पोति निश्चितम् ॥३९॥
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान्।
निर्भयो जायते मर्त्य: संग्रामेष्वपराजित: ॥४०॥
त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्य: कवचेनावृत: पुमान्।
इदं तु देव्या: कवचं देवनामपि दुर्लभम् ॥४१॥
य: पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयन्वित:।
दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येऽप्यपराजित: ॥४२॥
जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जित:।
नश्यन्ति व्याधय: सर्वे लूताविस्फोटकादय: ॥४३॥
स्थावर जंगमं वापि कृत्रिमं चापि यद्विषम्।
आभिचाराणि सर्वाणि मंत्रयंत्राणि भूतले ॥४४॥
भूचरा खेचराश्तैव जलजाश्चोपदेशिका:।
सहजा: कूलजा माला: शाकिनी डाकिनी तथा ॥४५॥

अन्तरिक्षचराधोरा डाकिन्यश्च महाबला:।
ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसा: ॥४६॥
ब्रम्हराक्षसवेताला: कूष्माण्डा भैरवादय: ।
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ॥४७॥
मानोन्नतिर्भवेद्राज्ञस्तेजो वृध्दिकरं परम् ।
यशसा वर्धंते सोऽपि कीर्तिमण्डित भूतले ॥४८॥
जपेंत्सप्तशती चण्डी कृत्वा तु कवचं पुरा ।
यावत्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम् ॥४९॥
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्तति: पुत्रपौत्रिकी ।
देहान्ते परमं स्थानं यन्सुरैरपी दुर्लभम् ॥५०॥
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामाया प्रसादत:।
लभते परमं रुपं शिवेन सह मोदते ॥५१॥
इति श्रीवराहपुराणे हरिहरब्रम्हविरचित
देवी कवच ॥

देवी की प्रार्थना

अपराध सहस्त्राणि कियंतेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरी ॥१॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरी ॥२॥
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरी ।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्ण तदस्तु मे ॥३॥
अपराध शतं कृत्वा जगदंबेति चोच्चरेत् ।
यां गति समवाप्नोति न तां ब्रम्हादय: सुरा: ॥४॥
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तत्स्वां जगदंबिके ।
इदानीमनुकंप्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ॥५॥

अज्ञानाब्दिस्मृतोर्भान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तत्सर्व क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥६॥
कामेश्वरि जगन्माता: सच्चिदानंदविग्रहे ।
गुहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ॥७॥
गुह्यातिगुह्योगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्पत्प्रसात्सुरेश्वरि ॥८॥

* * *

देवी स्तवन

अनंतरुपिणी लक्ष्मी: अपारगुणसागरी,
अणिमादिसिध्दिदात्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ।
आपदुध्दारिणी त्वमाद्या शक्ति: शुभापरा,
आद्या ह्यानन्ददात्री च शिरसा प्रणमाम्यहम् ।
जगन्माता जगत्कर्त्री जगधाररुपिणी,
जयप्रदा जानकी च शिरसा प्रणमाम्यहम् ।
अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकरप्राणवल्लभे,
ज्ञानवैराग्यसिध्द्यर्थं भिक्षान्देहि च पार्वती ।
या देवि सर्व भूतेषु शक्तीरुपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमा: ।
या देवि सर्वभूतेषू मातृरुपेण संस्थिता,
नमस्तेस्यै नमस्तस्यै नमस्तेस्यै नमोनम: ।

श्रीराम स्तवन

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे,
सहस्त्रनाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने।
श्री राम राम रघुनन्दन राम राम,
श्री राम राम भरताग्रज राम राम,
श्री राम राम रणकर्कश राम राम,
श्री राम राम शरणं भव राम राम,
श्री रामचन्द्र चरणौ मनसा स्मरामि,
श्री रामचन्द्र चरणौ वचसा घृणामि,
श्री रामचन्द्र चरणौ शिरसा नमामि,
श्री रामचन्द्र चरणौ शरण्यं प्रपद्ये.

रघुपतिराघव राजाराम
पतित-पावन सीता-राम.

शान्ति - पाठ

ॐ तत् सत् परमात्मने नमः

हरिः ॐ शं नो मित्रः, शं वरुणः, शं नो भवतु अर्यमा शं न इन्द्रो बृहस्ततिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः, हरिः ॐ, ॐ नमो ब्रम्हणे, नमस्ते वायो, त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रम्हासि, त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रम्ह वदिष्यामि, ऋतं वादिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि, तन्मामवतु, तद् वक्तारभमवतु, अवतु माम्, अवतु वक्तारम्, ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

मनः शुध्दि

ॐ अपवित्रं पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः॥

सुर्य नमस्कार

ॐ सूर्य सुन्दरलोकनाथममृतं वेदान्तसारं शिवं,
ज्ञानं ब्रम्हमयं सुरेशममलं लौकिकचित्त स्वयम् ।
इन्द्रादित्य नराधिपं सुरगुरुं त्रैलोक्यचुडामणिं,
ब्रम्हाविष्णुशिवस्वरुपहृदयं वन्दे सदा भास्करम् ॥

ॐ मित्राय नमः ॐ खगाय नमः
ॐ पूष्णे नमः ॐ अर्काय नमः
ॐ हिरण्यगर्भाय नमः ॐ मरीचये नमः
ॐ मार्तण्डाय नमः ॐ सूर्याय नमः
ॐ सवित्रे नमः ॐ भानवे नमः
ॐ रवये नमः ॐ आदित्याय नमः

ॐ विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव,
यद् भद्रं तन्न आसुव ।

* * *

गायत्री स्तवन

ॐ भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्
गायत्री त्र्यक्षरां बालां साक्षसूत्रकमंडलुं,
रक्तवस्त्रां चतुर्हस्ता हंसवाहनसंस्थिताम्;
ऋग्वेदे च कृतोत्संगां सर्वलक्षणसंयुतां,
ब्रम्हाणी ब्रम्हदैवत्यां ब्रम्हलोकनिवासिनीम्;
आवाह्याम्यहं देवीमायांती सूर्यमंडलात्,
आगच्छ वरदे देवी त्र्यक्षरे ब्रम्हवादिनी;
गायत्री-छदन्सां मातर्ब्रम्हयोनि नमोऽस्तुते.
गायत्री तु सकृत् स्मृत्वा जपलक्षफलं भवेत्
गायत्री दशधा जप्त्वा दशलक्षफलं भवेत्.

* * *

गायत्री मंत्र

Gayatri Maha-Mantra

ॐ: भुर्भूव: स्व:
ॐ: तत्सवितुर्वरेण्यम्
भर्गो देवस्य धी मही
धीयो यो न: प्रचोदयात् ॐ॥

O'm is the Protector and hence it is the name of our ever-protecting Lord-our most merciful Father. *

It is Truth, Intellect as also the Bliss Incarnate.*

The undefiled Light, which emanates from the Lord and which is all-pervading, world-manifesting and holding all the Divine Virtues, be attained by us.*

The effulgence thus attained by us may ever inspire our Intellect to hold steadfast to the path of Righteousness. *

संकटनाशन गणेशस्तोत्र

नारद उवाच

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकं,
भक्तावासं स्मरेन्नित्यं आयु: कामार्थ सिध्दये ॥१॥
प्रथमं वक्रतुंडं च एकदंतं द्वितीयकम्,
तृतीयं कृष्णपिंगाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥२॥
लंबोदरं पंचमं च षष्ठं विकटमेव च,
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥३॥
नवमं भालचंद्रं च दशमं तु विनायकम्,
एकादशं गणपतिम् द्वादशं तु गजाननम् ॥४॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं य: पठेन्नर:,

न च विघ्न भयं तस्य सर्वसिध्दिकरं प्रभो ॥५॥

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्,

पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥६॥

जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्,

संवत्सरेण सिध्दिं च लभते नात्र संशयः ॥७॥

अष्टभ्यौ ब्राम्हणानां च लिखित्वा यः समर्पयेत्,

तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥८॥

इति श्री नारदपुराणे संकटनाशनम् नामः

श्री गणेशस्तोत्रः संपूर्णः

* * *

जरथोस्ती गाथा

मज्दा अत् मोई वहिश्ता

स्त्रवाओस्चा श्योथनाचा वओचा।

ता-तू वोहू मनंघहा

अशाचा इषुदेम् स्तुतो

क्षमा का क्षथ्रा अहूरा फेरशेम्

वस्ना हइथ्येम् दाओ अहूम्

ऐ होरमज्द, सर्वोत्तम दीन (धर्म) के कलाम (शब्द) और कामों के बारेमें मुझे कह, ताकि मैं नेकीके रास्ते रहकर तेरी महिमाका गान करुं। तू जिस तरह चाहे उस तरह मुझे आगे चला। मेरी जिंदगी को ताजगी बख्श, और मुझे स्वर्ग का सुख दे।

* * *

UP WITH YOUR FEET !

Up with your feet,

Up with your hands;

And hold in readiness your heads,

To do lawful timely good deeds !

And for the undoing of bad and untimely deeds !

Here do deeds good and industrious

And render help to those devoid of help.

(Visperad 15)

अषेम् वोहू

अषेम वोहू वहिश्तेम् अस्ती,

उश्ता अस्ती, उश्ता अम्हाइ

ह्यत् अषाइ बहिश्ताइ अषेम् ।

Righteousness is the highest virtue. That alone is happiness. Happiness is to him who is righteous for the sake of further righteousness.

* * *

अहुनवर (यथा अहू वइर्यो)

यथा अहू वइर्यो । अथा
रतुश् । अषात् चीत् हचा ।
वंधहेउश् । दज़्दा मनंघहो । ष्यओथननांम् ।
अंघ्हेउश् मज्दाइ ।
क्षथ्रेम्चा । अहुराइ आ । यिम् ।
द्रिगुब्यो । ददत् वास्तारेम् ।

Just as the Temporal Ruler is all powerful among men, so too, is the Spiritual Master, even by reason of his Righteousness; the gifts of Good-Mind (Vohu-Mano) are for those, who work for Mazda, the Lord of Life; and the Strength of Ahura is given unto him, who unto his poor brethren giveth help.

येंङ्हे हातॉम्

येङ्हे हातॉम् आअत् यस्ने पइति वङ्हो मज्दा अहूरो वएथा अषात् हचा या आँङ्हाम्चा ताँस्चा ताओस्चा यज़मइदे ।

Amongst all human beings whom Mazda Ahura recognizes as purer (worthier) in every act of devotion, ever associated with righteousness, all such men and women we adore and honour.

***

केरफेह मोज़्द

केरफेह मोज़्द गुनाह गुजारेश्नेरा कुनम्, अशही वेह रवान दुशारम्रा हम् केरफेह हमा वेहांने हफत केश्वर ज़मीन्, - ज़मीन् पेहेना, रुद् - दराना, खोर्शीद-बाला, बुन्देहाद् बेरसाद; अशो बेद् देरज़ी। अथ जम्यात् यथ आफ्रिनामि। अषेम् वोहू।

To gain the reward of good deeds and to win forgiveness for my misdeeds, I perform righteous acts for the love of my Soul. May all good deeds of all good men, throughout the seven spheres, get their share of blessings wide as the earth, extensive as the rivers, exalted as the Sun. May thou be righteous and long-lived. May it come about as I entreat.

***

अष वहिश्त

अष वहिश्त, अष स्त्रएश्त, दरेसाम थ्वा, पइरि थ्वा जम्याम्, हमेम् थ्वा हख्म। अषेम् वोहू।

On account of the righteousness that is the best and the righteousness that is the highest; Oh God, may we see Thee. May we encompass Thee and may we befriend Thee.

***

वीस्प हूमत

वीस्प हुमत, वीस्प हुख्त, वीस्प हवर्श्त, बओघोवर्श्त, वीस्प दुश्मत, वीस्प दुजूख्त, वीस्प दुज्वर्श्त, नोइत् बओघो - वर्श्त. वीस्प हुमत, वीस्प हुख्त, वीस्प हवर्श्त वहिश्तेम् अंधहुइम अशएत. वीस्प दुश्मत, वीस्प दुजूख्त, वीस्प दुज्वर्श्त, अचिश्तेम् अंधहुइम् अशएत। वीस्पनांमच्, हुमतनांम, हुख्तनांम् हवर्श्तनाम् बहिश्त अंधहुइ; आअत् हच चिथ्रेम् अषओने। अषेम् वोहू।

All good thoughts, all good words and all good deeds, proceed from a wise Mind; all evil thoughts, all evil words and all evil deeds, do not so proceed. All good thoughts, all good words and all good deeds, lead one to the Best Existence; all evil thoughts, all evil words and all evil deeds, lead one to the worst Existence. The goal of goodness in thought, word and deed, is the Best-Life in the Realm of Light, So doth the righteous person declare.

अत् तोइ आतरेम

अत् तोइ आतरेम् अहुरा
अओजङध्हवन्तेम् अषा उसेमही
असीश्तेम् एमवन्तेम्, स्तोइ -
रपेन्तेम, चिथ्रा - अवंघ्हेम्;
अत् मज़्दा दइबिष्यन्ते जस्ता -
इस्ताइश् देरेश्ता अएनंघ्हेम्।

(Gatha Ahunavaiti : 34-4)

At toi Atarem

Thine Inner Fire Oh Ahura ! to see We yearn, - He blazes mightily through truth, He has Thy strength; our goal and hope is He. He guides the faithful clearly through life; But, O Mazda, in the hearts of infidels, He sees the hidden evil at a glance.

Jain Maha-Mantra Navkar

जैन महामंत्र

नवकार

नमो अरिहंताणं। नमो सिध्धाणं।
नमो आय्यरियाणं। नमो उवज्झायाणं।
नमो लोए सव्व साहुणम। एसो पन्च नमुक्कारो।
सव्व पावप्पणासणो। मंगलाणंच सव्वेंसी।
पढमं हवइ मंगलम्।

Homage be unto Arihantas (the most exalted souls). Homage be unto Siddhas (those who have attained Divinity). Homage be unto Acharyas (Masters of righteous actions). Homage be unto the Upadhyayas (Preceptors of higher study). Homage be unto all the Sadhus (those who have practised Sadhana).

Homage be unto all these five (personages).

The remembrancing of all these with greatest of purity and Bliss (inner joy) will do eternal good.

Sikh Mantra

शीख प्रार्थना

एक ओम्कार सतनाम् करतार पुरख
निरभऊ निर्वेर अकाल अमूरत
अजुनी सायभान गुरु प्रसाद जप
आदि सच, जुगादि सच,
हय भी सच, नानक,
होसिभी सच ॥

The word Omkar is the only one and That alone is the true word. That only is the all-doer Omnipotent God.

It is undefiled, unblemished, timeless and formless, All the companions of spiritualism accepted it as the holy Guru Prasad (Master's blessings) for remembrancing Him. In the beginning it was Truth. Since Ages it is Truth. At present also it is Truth and Nanak, it shall always remain as Truth.

स्वामी नारायण प्रार्थना

राग – ललित छंद

नमन हुं करुं घनश्यामने, करगरी कहुं कहुं गुणातीतने
पाये हुं पडुं यज्ञपुरुषने, विनवुं भावथी सर्व संतने
अरज माहरी उरमां धरो, विपत्ति सर्व आ दासनी हरो
अमारी बुध्दिने शुध्द करजो, हृदयमां प्रभुभक्ति भरजो
मुज अपराधने क्षमा आपजो, अक्षर पुरुषोत्तम कृपा राखजो
सारंगपुरना हरि कृष्णजी, गोन्डल देरी ना घनश्यामजी
विपत्ति काळमां आप छो धणी, दुःख कापजो हे गुरु हरि
स्वामी श्रीजीने हृदयमां धरी, प्रगट विचरो करुणा करी
हे प्रभुजी एक आस ताहरी, स्वामी राखजो लाज माहरी
जगत बांधवी अन्ते छोडशे, बहारे तुम बिना कोण आवशे
अवर आशरो माहरे नथी, अन्तर्यामीने शुं कहुं कथी
स्वामी माहरी अरज सुणजो, रसिकदासने पास राखजो

स्वामी नारायण प्रार्थना

हे हरि हरि प्रभु करुणा करी
नरनारी उगारवाने नरतनुं धरी – टेक
अक्षरधामी छो बहुनामी, स्वतंत्र सर्वाधार,
कळिमळ बळ जे प्रबळ थयो, हरि तेना छो हरनार १
असुर अधर्मी महा कुकर्मी, देता जनने दुःख;
मूळथी तेना कुळ उखाडी, सन्तने दीधां सुख २
वादी हराव्यां बंध कराव्या, हिंसामय बहु याग;
दारु, माटी, चोरी, अवेरी तेह कराव्या त्याग ३
पाळ धर्मनी आज शुं बांधी, लीधी अरिनी लाज;
धन प्रिय त्यागी साधू कीधा, सर्वोपरि महाराज ४
विश्वविहारी अज अविकारी, अवतारी अलबेल;
कल्पतरु छो सुख दैवामां, छोगाळा रंगछेल ५

कुरानसे प्रार्थना

पनाह

अऊजू बिल्लाहि मिनश् शैत्वानिर् रजीम् ॥
शरण लेता हूँ मैं अल्लाहकी,
पापात्मा शैतानसे बचने लिए।

अल् फातिहा

बिल्मिल्लाहिर् रह् मानिर् रहीम।
अल् हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन।
अर् रह् मानिर् रहीम, मालिकि यौमिद् दीन।
ईयाक नअबुदु व ईयाक नस्तईन।
ईहदिनस् सिरातल् मुस्तकीम।
सिरातल् लजीन अन् अम्त अलैहिम;
गैरिल् मगजुबे अलैहिम व लज्जुआल्लीन।

आमीन

पहले ही पहल नाम लेता हूँ अल्लाहका, जो निहायत रहमवाला मेहरबान है।

हर तरह की स्तुती भगवान के ही योग्य है।

वह सारे विश्वका पालने-पोसने वाला और उद्धारक, परमकृपालु, परमदयालु है। चुकौतीके दिन का वही मालिक है। (पाप-पुण्यक फल देने का वक्त उसीके आधीन है।)

हम तुम्हारी ही आराधना करते है, और तुम्हारी ही मदद माँगते है।

ले चलो हमको सीधी राह-उन लोगों की राह जिन पर तुम्हारा कृपाप्रसाद उतरा है।

उनके रास्ते नही, जिनपर तुम्हारी अप्रसन्नता हूई है या जो मार्ग भूले है।

तथास्तु

AL HAMDULILLAH

In the name of God, the beneficent, the Merciful, Praise be to God, Lord of the worlds, the Beneficent, the Merciful.

Owner of the day of Judgement,

Thee alone we worship; Thee alone we ask for help ! Show us the straight path,

The path of those whom Thou hast favoured;

Not the path of those who earn Thine anger, not of those who go astray.

(Koran-I-Sharif)

* * *

सुरत-इ-इखलास

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम।

कुल हुवल्लाहू अहद्। अल्लाहहुस्समद्।

लम् यलिद्, वलम् यूलद,

व लम् यकुल्लहू कुफवन अहद्॥

पहले ही नाम लेता हूँ अल्लाहका, जो निहायत रहमवाला मेहरबान है।

(ऐ पैगंबर ! लोग तुम्हे खुदाका बेटा कहते हैं। और तुमसे हाल खुदाका पूछते हैं, तो तुम उनसे कहो।)

कहो कि वह अल्लाह एक है और अल्लाह बेनियाज है, (उसे किसी की भी गरज नहीं) न उसका कोई बेटा है और न वह किसी से पैदा हुआ है. ओर न कोई उसकी बराबरीका है।

दुआये नूर

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम
अल्ला हुम-म या नुरो तनौव्वर-त बिन नूरे वन
नूरो फिन नूरे-नूरे-क या नूरो हुम-म बारिक
अलैना वर-फअ अन्नावला अना या रउफो
लब्लैक वर हम लब्लैक वश फअल ब्बैम वग फिर
लब्बैक क्क रिम लब्बैक व अन्नल्लाहा यब असो
मन फिल कुबूर अल्ला हुम-मर जुकना खैर द्वारैने
मअल कुर्बे वल इखलासे वल इस्तेकामते बे
लुत्फे-क व सल्लल्लाहो अला खैरे खलकिही मुहम्मदिव
व आलिही व असहाबिही अजमईन व
सल-ल-म तस्लीमन कसीरन कसीरा बे रहमति-क
या अर हमर राहेमीन ॥

दुआए जमीलह

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

या जमीलो या अल्लाह, या करीबो या अल्लाह,
या अजीबो या अल्लाह, या रअफो या अल्लाह,
या मअरुफो या अल्लाह, या लतीफों या अल्लाह,
या हन्नानो या अल्लाह, या मन्नानो या अल्लाह,
या मुजीबो या अल्लाह, या आजीमो या अल्लाह,
या सुबहानो या अल्लाह, या सुल्तानो या अल्लाह,
या मुस्तआनो या अल्लाह, या रहमानो या अल्लाह,
या मुतआली या अल्लाह, या रहमानो या अल्लाह,
या रहीमो या अल्लाह, या करीमो या अल्लाह,
या अलीमो या अल्लाह, या हलीमो या अल्लाह,
या जलीलो या अल्लाह, या मजीदो या अल्लाह,

या मुफ्ततेहल अबूबाबे या अल्लाह, या फर्दोया अल्लाहा,
या वित्रो या अल्लाह, या अ-हदो या अल्लाह,
या समदो या अल्लाह, या महमूदो या अल्लाह,
या सादिको या अल्लाह, या गनीयो या अल्लाह,
या शाफी या अल्लाह, या काफी या अल्लाह,
या मुआफी या अल्लाह, या बाकी या अल्लाह,
या आखेरो या अल्लाह, या जाहिरो या अल्लाह,
या बाविनो या अल्लाह, या मोहयमेनो या अल्लाह,
या अजीजो या अल्लाह, या सलामो या अल्लाह,
या जब्बारो या अल्लाह, या बारियो या अल्लाह,
या मुसव्विरो या अल्लाह, या हैयो या अल्लाह,
या काबिदो या अल्लाह, या मोइज्जो या अल्लाह,
या मुजील्लो या अल्लाह, या कबीयो या अल्लाह,
या मानेओ या अल्लाह, या हाफेजो या अल्लाह,

या दाफेओ या अल्लाह, या वकीलो या अल्लाह,
या कफीलो या अल्लाह,
या जलजलाले वल इकराम या अल्लाह,
या मुजीबद दाअवाते या अल्लाह,
या मुन्जे-लल ब-र-का-ते या अल्लाह,
या काफियल मुहिम्माते या अल्लाह,
या बकियल ह-स-नाते या अल्लाह,
या सैयदस सदाते या अल्लाह,
या माहिस सैयेआते या अल्लाह,
या राफेअद द-र-जाते या अल्लाह,
या वह-हाबो या अल्लाह,
या तव्वाबो या अल्लाह, या मतीनो या अल्लाह,
या हकीमो या अल्लाह, या मुकद्दिरो या अल्लाह,
या गफूरो या अल्लाह, या गफ्फारो या अल्लाह,

या मुब्दिओ या अल्लाह, या मुईदो या अल्लाह,
या खबीरो या अल्लाह, या बसीरो या अल्लाह,
या रफीओ या अल्लाह, या मुत-कब्बिरो या अल्लाह,
या समीओ या अल्लाह, या अव्वलो या अल्लाह,
या हादियो या अल्लाह, या काइमो या अल्लाह,
या सत्तारो या अल्लाह, या सातेरो या अल्लाह,
या फत्ताहो या अल्लाह,
या रब्बस समावते वल अर्दे या अल्लाह,
या जलजलाले वल हकराम या अल्लाह,
बे रहमते-क या अर हमर राहे मीन ॥

* * *

दुआए बुजुर्गवार

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम
अल्ला हुममा या रजाई या मूनाई या गियासी
या मुरादी या मुआफी या शिफाई या कमाँई
कफीय्युन युहही या गफूरो या गफूरो या गफूर
इगफिर्ली खती अती यव-म युब असून या अल्लाहो
या अल्लाहो या अल्लाह या गफूरो या गफूरो या
गफूर या रहमानो या रहमानो या रहमान या
रहीमो या रहीमो या रहीम या करीमो या करीमो
या करीम या करीमो व सल्लाल्लाहो अला खैर खलकिही
मुहम्मदिव व आलिही-ब-असहाबिही अजमईन
बि रहमते-क या अरहमर राहे मीन

* * *

चलो मन गंगा जमुना तीर

चलो मन गंगा जमुना तीर ॥
गंगा जमुना निर्मल पानी
शीतल होत शरीर ॥ चलो मन-
बन्सी बजावत गावत कान्हा
संग लिये बलबीर ॥ चलो मन-
मोर मुकुट पीतांबर शोभे
कुंडल झलकत हीर ॥ चलो मन-
'मीरा' के प्रभु गिरिधर नागर
चरण कमल पर सीर ॥ चलो मन-

* * *

मंगल मंदिर खोलो

मंगल मंदिर खोलो
दयामय ! मंगल मंदिर खोलो ॥धृ.॥
जीवन-वन अति वेगे वटाव्युं,
द्वार ऊभो शिशु भोळो,
तिमिर गयुं ने ज्योति प्रकाश्यो,
शिशुने ऊरमां लो - लो ॥१॥
नाम मधुर तम रटयो निरंतर,
शिशु सह प्रेमे बोलो,
दिव्य-तृषातुर आव्यो बालक,
प्रेम अमीरस ढोळो ॥२॥

* * *

तुम मेरी राखो लाज हरी

तुम मेरी राखो लाज हरी।
तुम जानत सब अन्तरजामी।
करनी कछु न करी ॥१॥
औगुन मोसे बिसरत नाही
पल छिन धरी धरी।
सब प्रपंचकी पोट बाँध करि
अपनें सीस धरी ॥२॥
दारा सुत धन मोह लिये हैं।
सुधि-बुधि सब बिसरी।
सूर पतितको बेग उधारो,
अब मेरी नाव भरी ॥३॥

* * *

जय जगदीश हरे

जय जगदीश हरे, भक्त जनोंके संकट छिनमें दूर करे।
जो ध्यावे फल पावे दुख विनसे मनका ॥धृ.॥
सुख संपति गृह आवे, कष्ट मिटे तनका,
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी,
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी - जय ॥१॥
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तरयामी
परब्रम्ह परमेश्वर, तुम सबके स्वामी
तुम करुणाके सागर, तुम पालनकर्ता
मैं मूरख, खल, कामी, कृपा करो भर्त्ता - जय. ॥२॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राण-पति
किस विध मिलूँ गुसाई, तुमको मै कुमति
दीन-बन्धु दुख-हरता, ठाकूर तुम मेरे
अपने हाथ उठाओ, द्वार परो तेरे
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा
श्रध्दा-भक्ति बढाओ, सन्तनकी सेवा - जय. ॥३॥

ठाकुर तुम शरणाई आया

ठाकुर तुम शरणाई आयो ।
उतरि गयो मेरे मनका संशा
जबते रो दरशन पायो ॥धृ.॥
अनबोलत मेरी बिरथा जानी
अपना नाम जपायो ।
दुख नाठे सुख सहजि समाये
अनंत अनंत गुण गायो ॥१॥
बाँह पकरि कढि लीने अखुने
गृह अंध कूपते मायो ।
कहु नानक गुरु बन्धन काटे
बिछुरत आनि मिलायो ॥२॥

अखियां हरी - दर्शनकी प्यासी

अखियां हरी दर्शन की प्यासी
देखो चाहत कमलनयन को
निस-दिन रहत उदासी - अखियां -
केशर तीलक मोतीयन माला
वृंदावनको वासी - अखियां -
काहू के मनकी कोई न जानत
लोगन के मन हांसी - अखियां -
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बीन
लागो करवत कासी - अखियां -

निर्धन के धन

निर्धन के धन राम हमारे
चोर न लेवे हारी न जावे
धाड पडै आवे काम,
निर्धन के धन राम -
सोवत बैठत जागत उठत
जपू हर हर नाम,
दिन दिन होते, होत सवायो,
खूटत नही एक दाम,
निर्धन के धन राम-
ठाकोर चले नगर द्वारा
पास नही खोटो बदाम,
कहत 'कबीरा' सुन भाई साधो
पारसको नही काम,
निर्धन के धन राम -

घूँघटका पट खोल रे !
तोको पीव मिलेंगे

घूँ घटका पट खोल रे ! तोको पीव मिलेंगे ।
घट घट में वह साँई रमता कटुक वचन मत बोल रे ॥
धन-जोबनको गरब न कीजैं झूठा पंचरँग चोल रे ।
सुन्न महलमें दियना बारिले आसनसो मत डोल रे ॥
जाग जुगुतसो रंग-महलमें पिय पायो अनमोल रे ।
कहै कबीर आनंद भयो है, बाजत अनहद ढोल रे ॥

* * *

मन लागो मेरो यार फकीरीमें ।

मन लागो मेरो यार फकिरीमें ।
जो सुख पावे राम भजनमें
सो सुख नाहि अमीरामें ॥१॥
भला बुरा सबका सुनि लीजै
कर गुजरान गरीबीमें ॥२॥
प्रेम नगरमें रहनि हमारी
भलि बनि आई सबूरीमे ॥३॥
हाथमें कूँडी बगलमें सोटा
चारो दिसि जागीरीमें ॥४॥
आखिर यह तन खाक मिलैगा
क्यूं रे फिरत मगरुरीमें ॥५॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो
साहिब मिलै सबूरीमें ॥६॥

भजो रे भैया राम गोविंद हरी ।

भजो रे भैया राम गोविंद हरी ॥धृ.॥
जप तप साधन कछु नहि लागत
खरचत नहि गठरी ॥१॥
संपत संपत सुखके कारण
जासे भूल परी ॥२॥
कहत कबीर जा मुख राम नहिं
वो मुख धूल भरी ॥३॥

रे मन ! मूरख जनम गँवायो ।

रे मन ! मूरख जनम गँवायो ।
करि अभिमान विषय-रस राच्यो स्याम सरन नहिं आयो ॥
यह संसार फूल सेमरको सुन्दर देखि भुलायो ।

चाखन लाग्यो रुई गई उडि, हाथ कछु नहिं आयो ॥
कहा भयो अबके मन सोचे, पहिले नहि कमायो ।
कहत सूर भगवंत भजन बिनु सिर धुनि धुनि पछितायो ॥

संतन के संग लाग

संतन के संग लाग रे, तेरी अच्छी बनेगी;
हँसन की गत हंसरी जाणे, क्या जाणे कोव काग रे ?
संतन को संग पूर्ण कमाई, होय बडो तेरो भाग रे,
ध्रुवकी बनी प्रल्हादकी बन गई, हरि सुमरन वैराग रे,
कहत कबीरा सुनो भाई साधो; राम भजन को लाग रे.

इस तन धनकी कौन बडाई

इस तन धनकी कौन बडाई,
देखत नैनोंमें मीट्टी मिलाई.
अपने खातीर महल बनाया,
आपहि जाकर जंगल सोया.
हाड जले जैसे लकरिकी मोली,
बाल जले जैसे घास की पोली.
कहत कबीरा सुन मेरे गुनिया,
आप मुवे पिछु डूब गई दुनिया.

मत कर मोह तू, हरि-भजनको मान रे ।

मत कर मोह तू, हरि - भजनको मान रे ।
नयन दिये दरसने करनेको, श्रवण दिये सुन ज्ञान रे ॥

वदन दिया हरिगुण गानेको, हाथ दिये कर दान रे ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, कंचन निपजत खान रे ॥

गुरु बिन

गुरु बिन कौन बतावे बाट
बडा विकट यमघाट।
गुरु बिन कौन बतावे बाट ?
भ्रांतिकी पहाडी नदिया बिचमें। अहंकारकी लाट ॥१॥
काम क्रोध पर्वत ठाढे। लोभ चोर संघात ॥२॥
मद मत्सरका मेहा बरसत। माया पवन बहे दाट ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो। क्यों तरना यह घाट ॥४॥

तू तो राम सुमर

तू तो राम सुमर जग लडवा दे - १
कोरा कागज काली स्याही,
लिखत पढत वा को पढवा दे - २
हाथी चलत है अपनी गत में,
कुतर भुंकत वा को भुंकवा दे - ३
कहत कबीरा सुनो भाई साधो,
नरक पचत वा को पचवा दे - ४

* * *

रहना नहिं देस बिराना है ।

रहना नहिं देस बिराना है ॥धृ.॥
यह संसार कागदकी पुडीया,
बूँद पडे घुल जाना है ॥
यह संसार काँटेकी बाडी,
उलझ उलझ मरि जाना है ॥
यह संसार झाड औ' झाँखर,
आग लागे बरि जाना है ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो,
सतगुरु नाम ठिकाना है ॥

* * *

मोहे कहाँ तू -

मोहे कहाँ तू ढूं ढे बंदे मै तो तेरे पासमें ।
ना मै कोई किरया करम मे, ना मै जोग सन्यास मै,
मै तो तेरे पासमें - ।
ना मै पोथी ना मै पडित, ना काशी कैलाश में,
ना रहता मै श्री द्वारिका, ना रहता जगन्नाथ में,
मै तो तेरे पासमें - ।
ना रहता मै मक्का मदिना, ना रहता हिमालय मे,
ना रहता मै जंगल सहरा, मै रहता विश्वास में
मै तो तेरे पासमें - ।
कहत कबीरा सुनो भाई साधो, सब श्वासन के श्वासमे,
जो खोजें तो तुरन्त मिलू मै, छिन भर की तैलाश में,
मै तो तेरे पासमें - ।
मोहे कहाँ तू ---- ॥

जन्म जन्मके सोये अभागी

जन्म जन्म के सोये अभागी
जागत जागत जागेगा
प्रभु प्रेमका पाका रंग
लागत लागत लागेगा
भवका भय मायाका भरम
भागत भागत भागेगा
हरीकी भक्ति गुरुकी सेवा
पावत पावत पावेगा
कहत ''कबीरा'' सुनो भाई साधो
कमल-चरण अनुरागेगा
जन्म जन्म के -

जीवन के दिन चार

जीवन के दिर चार, बाबा
जीवन के दिन चार
करना है सो कर ले, बाबा
यही जीवन का सार ॥ जीवन के
एक दिन है माता-पिता का
दूजा दिन है तेरा
बीबी माँगे बाँके तीजा
चौथा मौतका टेरा ॥१॥ जीवन के -

* * *

विदूर घर जाये

विदूर घर जाये चलो तुम
विदूर घर जाये ।
शबरी के बेर सुदामजी के चावल
रुचि रुचि भोग लगाये रे ॥
विदूर घर जाये --
बडे बडे मंदिर कौन कामके
भाव अन्दर नही पायेरे ॥
विदूर घर जाये --
'सूरदास' प्रभू तुमरे दरस बिन
काहे को देर लगाये रे ॥
विदूर घर जाये --

* * *

जानकीनाथ सहाय

जानकीनाथ सहाय करे जब ।
कौन बिगाड करे नर तेरो ॥
जानकीनाथ सहाय करे जब ।
कौन बिगाड करे नर तेरो ॥धृ.॥
सूरज, मंगल, सोम, भृगुसुत ।
बुध अरु गुरु वरदायक तेरो ।
राहू केतुकी नाहि गम्यता ।
संग शनिश्वर होत ऊचेरो ॥१॥
दुष्ट दु:शासन विमल द्रौपदी ।
चीर उतार कुमन्तर प्रेरो ।
जाकी सहाय करी करुणानिधि ।
बढ गये चीर के मार धनेरो ॥२॥
गरभमें राख्यो परीक्षित राजा ।

अश्वत्थामा जब अस्त्र प्रेरो ।
भारतमें मरुही के अंडा ।
ता पर गजका घंटा गेरो ॥३॥
जाकी सहाय करुणानिधि ।
ताके जगतमें भाग बडेरो ।
रघुवंशी संतन सुखदायी ।
तुलसिदास चरणनको चेरो ॥४॥

रघुवर ! तुमको मेरी लाज ।

रघुवर ! तुमको मेरी लाज ।

सदा सदा मै सरन तिहारी, तुम बडे गरीबनिवाज ॥
पतित-उधारन बिरुद तिहारो स्त्रवनन सुनी आवाज ॥
हौं तो पतित पुरातन कहिये, पार उतारो जहाज ॥
अघ-खंडन, दुख-भंजन जनके यही तिहारो काज ॥
तुलसिदास पर किरपा करिये भक्ति-दान देहु आज ॥

नाम जपन क्यों छोड दिया ?

नाम जपन क्यों छोड दिया ?
क्रोध न छोडा, झूठ न छोडा,
सत्यबचन क्यों छोड दिया ? ॥धृ॥
झुठे जगमें दिल ललचा कर
असल वतन क्यों छोड दिया ?
कौडीको तो खूब सम्हाला
लाल रतन क्यों छोड दिया ?॥१॥
जिहि सुमिरनसे अति सुख पावे
सो सुमिरन क्यों छोड दिया ?
खालस इक भगवान भरोसे
तन, मन, धन क्यों न छोड दिया ? ॥२॥

* * *

प्रभुजी ! तुम चंदन, हम पानी ।

प्रभुजी ! तुम चंदन, हम पानी ।
जाकी अँग अँग बास समानी ॥धृ.॥
प्रभुजी, तुम घन बन हम मोरा ।
जैसे चितवन चंद चकोरा ॥१॥
प्रभुजी, तुम दीपक, हम बाती ।
जाकी जोति बरै दिन राती ॥२॥
प्रभुजी, तुम मोती, हम धागा ।
जैसे सोनहि मिलत सुहागा ॥३॥
प्रभुजी, तुम स्वामी, हम दासा ।
ऐसी भक्ति करै रैदासा ॥४॥

* * *

माई मैंने गोविंद लीनो मोल ।

माई मैने गोविंद लीनो मोल ।
गोविंद लीनो मोल ॥धृ.॥
कोई कहे सस्ता, कोई कहे महेंगा,
लीनो तराजू तोल ॥१॥
कोई कहे घरमें, कोई कहे बनमें,
राधाके संग किलोल ॥२॥
मीराके प्रभु गिरिधर नागर,
आवत प्रेमके डोल ॥३॥

* * *

मोरी लागी लटक गुरु-चरननकी ।

मोरी लागी लटक गुरु-चरननकी ॥धृ.॥
चरन बिना मुझे कछु नही भावे
झूठ माया सब सपननकी ॥१॥
भवसागर सब सुख गया है,
फिकर नही मुझे तरननकी ॥२॥
मीरा कहे प्रभु गिरिधर नागर !
उलट भई मोरे नयननकी ॥३॥

* * *

मुझे लगन लगी

मुझे लगन लगी प्रभू पावन की।
ये जी पावन की घर लावन की।
मुझे लगन लगी --
छोड काज अरुलाज जगत की,
निसदिन ध्यान लगावन की,
'ब्रम्हानंद' मिटी सब प्यासा,
निरख छबी मन भावन की।
मुझे लगन लगी --
झिल-मिल कारी, ज्योत तिहारी,
जैसे बिजली सावन की,
सूरत उजाली, खुल गयी ताली,
गगन महल में जावन की।
मुझे लगन लगी ---

उठ जाग मुसाफिर भोर भई

उठ जाग मुसाफिर भोर भई
अब रैन कहाँ जो सोवत है ॥धृ.॥
जो सोवत है सो खोवत है
जो जागत है सो पावत है ॥१॥
टुकमिंदसे अँखियाँ खोल जरा,
ओ गाफिल, रबसे ध्यान लगा।
यह प्रीत करनकी रीत नहीं,
रब जागत है तू सोवत है ॥२॥
अय जान, भुगत करनी अपनी,
ओ पापी, पापमें चैन कहाँ ?
जब पापकी गठरी सीस धरी,
फिर सीस पकड क्यों रोवत है ? ॥३॥
जो काल करे सो आज कर ले,

जो आज करे सो अब कर ले।
जब चिडियन खेती चुगि डाली,
फिर पछताये क्या होवत है ? ॥४॥

गोपाला मेरी करुणा क्यों नहीं आवे ?

गोपाला मेरी करुणा क्यों नहीं आवे ॥धृ.॥
घडी घडी पल पल छन न बिसारुँ।
तुमको दया क्यों नही आवे ॥१॥
हम पतित, तुम पतित-उधारन।
अंतर सार बतावे ॥२॥
निधिरामजीको संत मतो है।
गुरु बिन कौन छुडावे ॥३॥

नही रे विसारुं हरि, अंतरमाथी नही रे

नही रे विसारुं हरि, अंतरमाथी नही रे ॥धृ.॥
जल जमुनानां पाणी रे जातां
शिर पर मटकी धरी. १
आवतां ने जातां मारग वच्चे
अमूलख वस्तु जडी. २
आवतां ने जातां वृन्दा रे वनमां
चरण तमारे पडी. ३
पीळां पीतांबर जरकशी जामा
केशर आड करी. ४
मोर मुगट ने कान रे कुंडल
मुख पर मोरली धरी. ५
मीरा कहे प्रभु गिरिधरना गुण
विठ्ठलवरने वरी. ६

पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो

पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो ॥टेक॥
वस्तु अमोलिक दी मेरे सतगुरु,
किरपा कर अपनायो ॥१॥
जनम जनमकी पूँजी पाई,
जगमे सभी खोवायो ॥२॥
खरचै न खूटै, वाको चोर न लूटै,
दिन दिन बढत सवायो ॥३॥
सतकी नाव, खेवटिया सतगुरु,
भवसागर तर आयो ॥४॥
मीराके प्रभु गिरिधर नागर,
हरख हरख जस गायो ॥५॥

अगर है शौक मिलनेका

तो हरदम लौ लगाता जा

अगर है शौक मिलनेका, तो हरदम लौ लगाता जा।
जलाकर खुदनुमाईको, भसम तन पर लगाता जा॥
पकडकर इश्ककी झाडू, सफा कर हूज्र-ए दिलको।
दूईकी धूलको लेकर, मुसल्ले पर उडाता जा॥
मुसल्ला छोड, तबसी तोड, किताबे डाल पानी में।
पकड दस्त तू फरिश्तोंका, गुलाम उनका कहाता जा॥
न मर भूखा, न रख रोजा, न जा मस्जिद, न कर सिजदा।
वजूका तोड दे कूजा, शराबे-शोक पीता जा॥
हमेशा खा, हमेशा पी, न गफलतसे रहो इकदम।
नशेमे सैर कर अपनी, खुदीको तू जलाता जा॥
न हो मुल्ला, न हो बम्मन, दुईकी छोडकर पूजा।

हुकम है शहा कलंदरका, 'अनलहक' तू कहता जा॥
कहे मंसूर मस्ताना, हक मैने दिलमें पहचाना।
वही मस्तोका मयखाना, उसीके बीच आता जा॥

दुआ - १

ओ मोआमिनो इजजो इलति जाके साथ
अब दुआ के लिए उठाओ हाथ
या खुदा सदका किब्रियाईका
सदका उस नूरे मुस्तफाईका
सीधे रास्ते चलाईयो हमको
पेचोखम से बचाइयो हमको
मरते दम गयबसे मदद कीजियो
साथ ईमानके उठा लीजियो
जब दमे - वापसी हो या अल्लाह !

साथ ईमाँ के मैं जाऊँ या गफूर
हश्रमें जब खल्क हो अंदोहगीं,
मुझको बक्षावें शफी उल मुझनबी

जानकी नाथ सहाय ।

जानकी नाथ सहाय करे जब,
कौन बिगाड करे नर तेरो,
सूरज मंगल, सोम भृगु सुत,
बुध अरु गुरु वरदायक तेरो,
राहू केतु की नाही गम्यता,
संग शनिश्चर होत उचेरो,
जानकी नाथ सहाय ।

दया कर दान भक्तिका

दया कर दान भक्तिका, हमे परमात्मा देना ।
दया करना हमारी, आत्मामें शुध्धता देना ॥
हमारे ध्यानमें आओ, प्रभू आँखोमें बस जाओ
अंधेरे दिलमें आ करके, परम ज्योति जगा देना ॥
बहादो प्रेमकी गंगा, दिलो में प्रेम का सागर
हमे आपसमें मिलजुलकर, प्रभू रहना सिखा देना ॥
हमारा कर्म हो सेवा, हमारा धर्म हो सेवा
सदा ईमान हो सेवा, व सेवकवर बना देना ॥
वतनके वास्ते जीना, वतनके वास्ते मरना
वतन पर जाँ फिदा करना, प्रभू हमको सिखा देना ॥

लबपे हो ला इलाह इल लिल्लाह
कीना धो सबी के सीने से
सीना हो जाए पाक कीने से
सब को एक राहे हक्क दिखा या रब !
दूर हो ये इखतिलाफे बेजा सब
दीन हो दीने एहमदी कुलका
हो तरीका मुहम्मदी सब्रका
या खुदा ! तू समी ओ मुजीब
बेमुरादोंको कर तू मुराद नसीब
न रहे कोई खस्ता-दिल गमगीन
सबकी पूरी मुराद हो आमीन !
आमीन ! आमीन ! आमीन !

दुआ - २

या इलाही क्या कहूँ मैं हाले ज़ार,
मैं गुनाहोसे निहायत शर्मसार --
काम नेकीका नही मुझसे हुआ,
गर्क इसयांमें रहा सुबहो मशा
तेरे दर पर सिज़देमें रक्खा है सर
छोड इस दरको भला जाऊँ किधर ?
क्यों न बक्षिसका रहूँ उम्मीदवार ?
मैं गुनाहगार और तू आमुर्ज़गार
तूने अपने फज़लसे ऐ किर्दगार
मुझको दुनियामें किया है बा वेकार
इस लिए यह है दुआ शामो सुबह
रख हमेशा फज़लकी मुझ पर निगाह
जब के रोज़े-वापसीका हो ज़ूहुर

तुम्ही हो माता

तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो,
तुम्ही हो बंधु सखा तुम्ही हो।
तुम्ही हो साथी, तुम्ही सहारे
कोई न अपना सिवा तुम्हारे,
तुम्ही हो नैया तुम्ही खेवैया
तुम्ही हो बंधु सखा तुम्ही हो
तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो ---
जो खिल सकते वो फूल हम है
तुम्हारे चरणों की धूल हम है,
दया की दृष्टि सदा ही रखना
तुम्ही हो बंधु सखा तुम्ही हो
तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो ---।

श्रीराम स्तवन

श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन
हरण भव-भय दारुणम्।
नव-कंज-लोचन कंज मुख
कर कंज पद कंजारुणम्।
कन्दर्प अगणित अमित छवि
नव-नील-नीरज सुन्दरम्।
पट पीत मानहुँ तडित रुचि शुचि
नौमी जनक सुतावरम्।
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव
दैत्य वंश निकन्दनम्।
रघुनन्द आनन्द कन्द कोशल चन्द
दशरथ नन्दनम्।

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु
उदार अंग विभूषणम्।
आजानु भुज शर-चाप धर
संग्राम जित खर दूषणम्।
इति वदति तुलसीदास शंकर
शेष मुनि मन रंजनम्।
मम हृदय-कंज निवास करु
कामादि खल दल गंजनम्।

इस तनमें

इस तनमें रमा करना, इस मनमें बसा करना
वैकुंठ तो यही है, नयनोंमें रहा करना
बन करके मोर मोहन, नाचा करेंगे बनमें
तुम श्याम घटाये बन, इस मनमें उडा करना

- इस तनमें
बन करके हम पपीहा, पी पी रटा करेंगे
तुम स्वाति बूँद बनकर, प्यासोंपे दया करना
- इस तनमें
हम चित्तचकोर लेकर, दर्शन किया करेंगे
निरुपाधि पूर्णिमाके, तुम चांद खिला करना
- इस तनमें
तेरे वियोगमें हम दिन रात घूम रहेंगे
तुम सोहं शब्द बनकर, प्राणोमें रमा करना
- इस तनमें
निर्लेप माया जालसे, हम कमल है निराले
तुम कृष्ण-भ्रमर बनकर, गून्जन तो किया करना
अय श्याम मुरली लेकर, गून्जन तो किया करना
- इस तनमें

राम-नाम-रस पीजै

राम-नाम-रस पीजै,
मनुआ राम-नाम-रस पीजै।

तज कुसंग सत-संग बैठ नित,
हरि-चरचा सुनि लीजै॥

काम क्रोध मद लोभ मोहकुँ
बहा चित्तसों दीजै।

मीराके प्रभु गिरधर नागर,
ताहिके रंगमें भीजै॥

* * *

प्रकृति से शिक्षा

फूलों से तुम हँसना सीखो, भौंरो से तुम गाना।
सूरज की किरणों से सीखो, जगना और जगाना॥१॥
मुर्गों की बोली से सीखो, प्रातःकाल उठ जाना।
मेंहदी के पत्तों से सीखो, पिस पिस कर रंग लाना॥२॥
फलदार वृक्षों से सीखो, फल पाकर झुक जाना।
पत्तेंझड वृक्षों से सीखो, दुःख में ना घबडाना॥३॥
अग्नि और धुएँ से सीखो, ऊँची मन्जिल जाना।
मछली के जीवन से सीखो, धर्म के हित मर जाना॥४॥
पृथ्वी से सहन शक्ति सीखो, वायु से सर्व समाना।
कृष्णानन्द सबसे कुछ सीखो, जो चाहो कल्याना॥५॥

– कृष्णानन्द

* * *

तुम मेरे स्वामी

तुम मेरे स्वामी अंतरयामी
मात पिता तुम मेरे
तुम मेरे तनमन, तुम मेरे जीवन
बंधु सखा तु मेरे ॥ तुम मेरे स्वामी
मेरे मनकी तूही जाने
जाऊँ किसीको और सुनाने
दुखिया मनकी करुण कहानी
तूही एक सुनेरे ॥ तुम मेरे स्वामी
चारो और उठी है आँधी
अजब साधना मैंने पाई
आँचलमें एक दीप छुपा है
कभी न हाय बुझेरे ॥ तुम मेरे स्वामी

* * *

ऐ मालिक

ऐ मालिक तेरे बंदे हम, ऐसे हो हमारे कदम
नेकी पर चले और बदीसे टले,
ताकि हँसते हुए निकले दम, है मालिक -।
बडा कमजोर है आदमी,
अभी लाखो है इसमें कमी,
पर तू जो खडा है दयालु बडा,
तेरी किरपासे धरती थमी
दिया तूने हमे जब जनम
तूही लेलेगा हम सबके दम, नेकी पर - ।
जब जुल्मोंका हो सामना,

* * *

तब तूही हमें थामना
वो बुराई करे हम भलाई करे
नही बदले की हो कामना
बढ उठे प्यार का हर कदम
और मिटे वैर का ये भरम, नेकी पर - ।
ये अंधेरा घना छा रहा,
तेरा इन्सान घबरा रहा
ये रहा बेखबर, कुछ न आता नजर
सुख का सूरज डूबा जा रहा,
है तेरी रोशनी में जो दम,
तो अमावस को कर दें पूनम, नेकी पर - ।

* * *

नित्य सबेरे

नित्य सबेरे उठकर करना
माता पिता प्रभुको प्रणाम,
उषाकालसे पढने लगना
यह अच्छे छोटो का काम - २
सदा साफ ही वस्त्र पहनना
अपना काम समयपर करना
आजका काम आज कर लेना
यह अच्छे छोटोंका काम -२
स्फूर्तीसे कर काम दिखाना
सुस्तीका नहीं लेना नाम
राष्ट्र हेतु निज प्राण गँवाना
यह अच्छे छोटों का काम - २
अच्छे बालक उन्नति करके

दुनियामें कर जाते नाम
मातृ भूमिकी सेवा करना
यह अच्छे छोटों का काम -२

ॐ तत्सत् श्री

ॐ तत्सत श्री नारायण तू। पुरुषोत्तम गुरु तू।
सिध्द बुध्द तू। स्कन्ध विनायक। सविता पावक तू।
ब्रम्हमझद तू। यहवह शक्ति तू।
ईशूपिता प्रभू तू। रुद्र विष्णु तू। रामकृष्ण तू।
रहीम ताओ तू। वायुदेव गो विश्वरुप तू।
चिदानंद हरि तू। अद्वितीय तू।
अकाल निर्भय। आत्मलिंग शिव तू॥ ॐ तत्सत।

एक ज दे चिनगारी, महानल !

एक ज दे चिनगारी, महानल !
एक ज दे चिनगारी. धृ.
चकमक लोढुं घसतां घसतां
खरची जिंदगी सारी ;
जामगरीमां तणखो न पड्यो
न फळी महेनत मारी।
चांदो सळग्यो सूरज सळग्यो
सळगी आभ अटारी ;
ना सळगी एक सगडी मारी
वात विपतनी भारी २
ठंडीमा मुज काया थथरे
खूटी धीरज मारी ;
विश्वानल ! हुं अधिक न मागुं
मागुं एक चिनगारी. ३

जीभलडी रे, तने हरिगुण गातां आवडुं आळस क्यांथी रे ?

जीभलडी रे, तने हरिगुण गातां आवडुं आळस क्यांथी रे ?
लवरी करतां नवराई न मळे, बोली उठे मुखमाथी रे.
परनिंदा करवाने पूरी, शूरी खटरस खावा रे;
झगडो करवा झूझे वहेली; कायर हरिगुण गावा रे.
अंतकाल कोई काम न आवे, वहाला वेरीनी टोळी रे;
वजन धारीने सर्वस्व लेशे, रहेशो आंखो चोळी रे.
तल मंगावो ने तुलसी मंगावो रामनाम संभळावो रे;
प्रथम तो मस्तक नहि नमतुं, पछी शुं नाम सुणावो रे ?
घर लाग्या पछी कूप खोदावे, आग ए केम होलवाशे रे ?
चोरो तो धन हरी गया, पछी दीपकथी शुं थाशे रे ?
मायाघेनमां ऊँघी रहे छे, जागीने जो तुं तपासी रे ;
अंत समे रोवाने बेठी, पडी काळनी फांसी रे.

हरीगुण गातां दाम न बेसे, एके वाळ न खरशे रे ;
सहज पंथनो पार न आवे, भजन थकी भव तरशे रे.

वैष्णव जन तो तेने कहीए, जे पीड पराई जाणे रे.

वैष्णव जन तो तेने कहीए, जे पीड पराई जाणे रे;
पर दुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे. ॥धृ.॥
सकळ लोकमां सहुने वंदे, निंदा न करे केनी रे।
वाच काछ मन निश्चळ राखे, धन धन जननी तेनी रे.।
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे ;
जिव्हा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे. २
मोह माया व्यापे नहि जेने, दृढ वैराग्य जेना मनमां रे ;
रामनामशुं ताळी लागी, सकळ तीरथ तेना तनमां रे. ३
वणलोभी ने कपटरहित छे, काम क्रोध निवार्या रे ;
भणे नरसैयो तेनुं दरसन करतां, कुळ एकोतेर तार्या रे. ४

'बॉईज टाऊन' के संस्थापक
स्वर्गीय शेठ 'पीरोजशा' की स्मृतिमें

– श्रध्दांजली –

शब्द और स्वर रचना

श्री. द. के. खरवंडीकर

संस्थापक की पुण्य स्मृतिका
मंगलमय दिन आजका
'पीरोजशा' जी अमर रहे
यह नारा 'बॉईज टाउन' का ॥१॥
'टाउन' का यह सारा परिसर
प्रेम भावना दिलमें रखकर
गत इतिहास याद करता है
'पीरोजशा' के जीवन का ॥२॥
'पीरोजशा' जी अमर रहे –

'पीरोजशा' ने दिया जलाया
सुपुत्र 'नौशिर' के हाथ दिया
सुयोग्य नेतृत्वसे बनेगा
भविष्य उज्वल संस्थाका ॥३॥
'पीराजशा' जी अमर रहे –
विद्या – बल – नीति संवर्धन
शिक्षक-बालक-का यह साधन
ज्ञानदीप से हट जायेगा
अंधकार सबके मनका ॥४॥
'पीरोजशा' जी अमर रहे –
'पीरोजशा' की पुण्यस्मृतिपर
व्यक्त करत हम अपना आदर
चिरंजीवि हो उनका स्मारक
'बालनगर' यह 'नासिक' का ॥५॥
'पीरोजशा' जी अमर रहे –

हरिनो मारग छे शूरानो, नहिं कायरनुं काम जोने

हरिनो मारग छे शूरानो, नहि कायरनुं काम जोने ;
परथम पहेलुं मस्तक मूकी, वळतां लेवुं नाम जोने. धृ.
सुत वित दारा शीश समरपे, ते पामे रस पीवा जोने:
सिंधु मध्ये मोती लेवा, मांही पड्या मरजीवा जोने. १
मरण आंगमे ते भरे मूठी, दिलनी दुग्धा वाम जोने;
तीरे उभा जुए तमासो, ते कोडी नव वामे जोने. २
प्रेमपंथ पावकनी ज्वाळा, भाळी पाछा भागे जोने ;
मांही पड्या ते महासुख माणे, देखनारा दाझे जोने. ३
माथा साटे मोघी वस्तु, सापडवी नहि सहेल जीने ;
महापद पाम्या ते मरजीवा, मूकी मननो मेल जोने. ४
राम-अमलमां राता माता, पूरा प्रेमी परसे जोने ;
प्रीतमना स्वामीनी लीला, ते रजनीनंद नरखे जोने. ५

बस, अब मेरे दिलमें बसा एक तू है ।।

बस, अब मेरे दिलमें बसा एक तू है ।।
मेरे दिलका अब दिलरुबा एक तू है ।।
फकत तेरे कदमोंसे अय मेरे खालिक ।।
लगा अब मेरा ध्यान श्यामो सुबू है ।।
मेरा दिल तो तुझसे हि पाता है तसल्ली ।।
बसी मग्जमें प्रेमके तेरी बू है ।।
समझते है यूँ मुझको अकसर दिवाना ।।
तेरा ज़िक्र विरदे जबाँ कूबकू है ।।
नहीं मुझको दुनियवी खुशबूसें उल्फत ।।
तेरा प्रेम ही अब मेरा मुश्को बू है ।।
रँगुँ प्रेमसे तेरे दिलका ये चोला ।।
इसे ज्ञानसे अब किया कुछ रफू है ।।
न पाला पडे नफ्से शैताँसें मुझको ।।
तेरे दासकी अब यही आरज़ू है ।।

ईश्वर स्तवन

अहो देवना देव हे विश्व स्वामी
करुँ हुं स्तुति आपनी शीश नामी
दयालु प्रभु आपदाथी उगारो
दीनानाथ तु एक आधार मारो ॥१॥
प्रभु मात ने तात छो आप मारा
तमे छो सदा सर्वने पालनारा
किधा छे करोडो तमे उपकारो,
दीनानाथ तु एक आधार मारो ॥२॥
हूँ छूँ रांक नो रांक अज्ञान प्राणी
न मारी कशी वात तुंथी अजाणी,
करो हे दयाळू क्षमा वांक मारो,
दीनानाथ तु एक आधार मारो ॥३॥
अमे बालको बोलीए हाथ जोडी,

अमारी मति छे प्रभू छेक थोडी,
दया लावीने प्रार्थना दिल धारो,
दीनानाथ तु एक आधार मारो ॥४॥
अमे ने कुटुंबीजनो जे अमारा,
रहीए शरीरे सुखी सर्व सारा,
सदा आपजो आप सारा विचारो,
दीनानाथ तु एक आधार मारो ॥५॥
नथी मे करी आपनी कोई भक्ति,
नथी आपना गुण गावानी शक्ति,
दया लावीने दास दुःखो निवारो,
दीनानाथ तु एक आधार मारो ॥६॥
अहो देवना ----
करु हुं स्तुति ---॥

जरथोस्ती तो तेने कहिए

जरथोस्ती तो तेने कहिए, उच्च जीवन जे गाळे रे,
पयगम्बरने पगले चाली, नियम अषोइना पाळे रे,
शस्त्र जेनुं सुदरेह कुस्ती, शांति जेनी ढाल रे,
सदाचारी पर उपकारी, सौनी लेतो संभाळ रे - जर
न्याय जेनो नियम साचो, पर दुःसे ए दाझे रे,
निंदा नालेशी जुठाणुं, दगाथी तो ए लाजे रे - जर
मनश्नीमां मन छे जेनुं, गवश्नीमां जे राचे रे,
कुनश्नी छे जेने प्यारी, बंदो खुदानो ए साचे रे - जर
सखावतमां जे छे शूरो, भक्तिमांहि चकचूर रे,
एक खुदामां श्रध्दा साची, दाझ धर्मनी जेना उरमां रे - जर
प्रमाणिकता जेनो मुद्रालेख, वतन प्रेमी ए वीर रे,

निखालस छे हृदय जेनुं, वीर धीर गंभीर रे - जर
हसी हसावे सहु दुखियाने, आनंदी मुख जेनुं रे,
दया माया, विवेक महोब्बत, सौ जन साथे लहेणुं रे - जर
चटपटियो छे स्वभाव जेनो, आळस शत्रु जेनो रे,
जीवन-संग्राम खेलवा जे तत्पर, पुरुषार्थ वहालो तेने रे - जर
दुःखथी ना जे भागे दूर दूर, बदी सामे भीडे बाथ रे,
अहुनवर जेनो मंत्र अद्‌भुत, राखे अहुरने संगाथ रे - जर
वहेमो जादु मंत्र थी निरालो, मांथ्र वाणी पर कुरबान रे,
'नाहिद' गाइए वखाण तेना, जेना उरमां ना अभिमान रे -

लेखक - श्री. डोसाभाई हो. देसाई

जे गमे जगत-गुरु देव जगदीशने,

जे गमे जगत-गुरु देव जगदीशने,
ते तणो खरखरो फोक करवो ;
आपणो चिंतव्यो अर्थ कोई नव सरे,
ऊगरे एक उद्वेग धरवो, १

हुं करूं, हुं करूं ए ज अज्ञानता,
शकटनो भार जेम श्वान ताणे;
सृष्टि मंडाण छे सर्व एणी पेरे,
जोगी जोगेश्वरा कोईक जाणे । २

नीपजे नरथी तो कोई ना रहे दुखी,
शत्रु मारीने सौ मित्र राखे ;
राय ने रंक कोई दृष्ट आवे नहि,
भवन पर भवन पर छत्र दाखे । ३

ऋतु लता पत्र फळ फूल आपे यथा,
मानवी मूर्ख मन व्यर्थ शोचे;
जेहना भाग्यमां जे समे जे लख्युं,
तेहने ते समे ते ज पहोंचे । ४

ग्रन्थ गरबड करी वात न करी खरी,
जेहने जे गमे तेने पूजे;
मन कर्म वचनथी आप मानी लहे,
सत्य छे ए ज मन एम सूझे । ५

सुख संसारी मिथ्या करी मानजो,
कृष्ण विना बीजुं सर्व काचुं ;
जुगल कर जोडी करी नरसैंयो एम कहे,
जन्म प्रतिजन्म हरिने ज जाचुं । ६

* * *

प्रभु तने प्रसन्न ते केम थाय ?

तारा दिलनुं कपट नव जाय

प्रभु तने प्रसन्न ते केम थाय तारा दिलनुं कपट नव जाय

हरिकिर्तन हरिनाम स्मरणमां अतिशय आळस तारे

डाचा कुटलव परनिंदामां आखो दिवस नव हारे - प्रभु.

हरिनु पूजन करती वेळा काया तारी कंपे,

गंजीफो सोगठां कूटतां आठ प्रहर नव जंपे - प्रभु.

एकादशी ओच्छवना जागरण अति कठण तने लागे,

भांड भवाया जोवा सारुं सारी रातज जागे - प्रभु.

हरिनु चंदन घसतां तारूं श्रमथी शरीर बगडे,

कुंडी कुदकुं लई मरी मसालो भावे भांगज रगडे - प्रभु.

खोटां मोती काच कीडियां भगवत भूषण घाले,

सोना रूपा मणी विना सुत स्त्रीने नव चाले - प्रभु.

जपकरे त्यां जपवा बेसे बाकी नाह्य न खावा,

गळां कापे त्यां थाय गळगळो ए वैश्णवना चाळा - प्रभु.

आ करवुं आ ना करवुं एम अन्यने शिक्षा दे छे,

ते प्रमाणे तुं नथी करतो अनुचित कर्म करे छे - प्रभु.

अंतरना छळ अन्य न लहे पण जाणे अंतरजामी,

तुं तो साचानो संगी छे दास दयानो स्वामी - प्रभु.

* * *

ज्यां लगी आत्म-तत्व चीन्यो नहिं.

ज्यां लगी आत्म-तत्व चीन्यो नहि,
त्यां लगी साधना सर्व जूठी;
मनुष्य-देह तारो एम येळे गयो,
मावठानी जेम वृष्टि झूठी. १

शुं थयुं स्नान पूजा ने सेवा थकी,
शुं थयुं घर रही दान दीधे ?
शुं थयुं धरी जटा भस्म लेपन कर्ये,
शुं थयुं वाळ लोचन कीधे ? २

शुं थयुं तप ने तीरथ कीधा थकी;
शुं थयुं माळ ग्रही नाम लीधे ?
शुं थयुं तिलक ने तुलसी धार्या थकी,
शुं थयुं गंगाजल पान कीधे ? ३

शुं थयुं वेद व्याकरण वाणी वद्ये,
शुं थयुं राग ने रंग जाण्ये ?
शुं थयुं खट दरशन सेव्या थकी,
शुं थयुं वरणना भेद आण्ये ? ४

ए छे परपंच सहू पेट भरवा तणा,
आतमाराम परिब्रम्हा न जोयो;
भणे नरसैयो के तत्व-दर्शन विना,
रत्न-चिंतामणी जन्म खोयो ५

* * *

दिलमां दीवो करो, रे दीवो करो

दिलमां दीवो करो, रे दीवो करो,
कूडा काम क्रोधने परहरो, रे दिलमां दीवो करो
दया दिवेल प्रेम परणायुं लावो,
मांही सुरतानी दिवेट बनावो;
मही ब्रम्ह-अग्निने चेतावो रे। दिलमां
साचा दिलनो दीवो ज्यारे थाशे,
त्यारे अंधारू मटी जाशे;
पछी ब्रम्हलोक तो ओळखाशे रे। दिलमां .
दीवो अणभे प्रकट एवो,
टाळे तिमिरना जेवो;
एने नैणे तो नीरखीने लेवो रे। दिलमां .
दास रणछोड घर संभाळ्युं,
जडी कूंची ने उघड्युं ताळुं;
थयुं भोमंडळमां अजवाळुं रे, दिलमां .

अखिल ब्रह्मांडमां एक तुं श्रीहरि

अखिल ब्रह्मांडमां एक तुं श्रीहरि,
जूजवे रूपे अनंत भासे;
देहमां देव तुं तेजमां तत्व तुं,
शून्यमाँ शब्द थयी वेद वासे. १
पवन तुं, पाणी तुं, भूमि तुं, भूधरा,
वृक्ष थयी फुली रह्यो आकाशे;
विविध रचना करी अनेक रस लेवाने,
शिव थकी जीव थयो ए ज आशे. २
वेद तो एम वदे, श्रुति-स्मृति साख दे -
कनक कुण्डल विषे भेद नहोये ;
घाट घडिया पछी नामरुप जूजवां,
अँते तो हेमनुं हेम होये. ३
वृक्षमां बीज तुं, बीजमां वृक्ष तुं,

जोउं घटंतरो एं ज पासे ;
भणे नरसैंयो ए मन तणी शोधना,
प्रीत करूं प्रेमथी प्रगट थाशे. ४

बोल मा, बोल मा, बोल मा, रे.

बोल मा, बोल मा, बोल मा, रे
राधा-कृष्ण विना बीजुं बोल मा ॥धृ.॥
साकर शेलडीनो स्वाद तजीने
कडवो लीमडो घोळ मा रे ॥१॥
चांदा सूरजनुं तेज तजीने
आगिया संगाथे प्रीत जोड मा रे ॥२॥
हिरा माणेक अने झवेर तजीने
कथीर संगाते मणि तोळ मा रे ॥३॥

एकल तुं दादार

एकल तुं दादार --
एकल तुं दादार अमारो
एकल तुं दादार --
मुझवणमां चिंतवनमां अमारो
एकल तुं आधार
अमारो एकल तु दादार--
जुग जुगना अमे जाचक तारा
रेडे अमीरस धार
तारी महेर तणो नहि पार
अमारो एकल तुं दादार--
दीघुं तारू दईने अमे तो
मानी रह्या आभार
अमारो एकल तुं दादार --

लेखक : बेजन न देसाई

दीनानाथ दयाळ नटवर !

हाथ मारो मूकशो मा

दीनानाथ दयाळ नटवर ! हाथ मारो मूकशो मा;
हाथ मारो मूकशो मा, हाथ मारो मूकशो मा । धृ.
आ महा भवसागरे, भगवान हुं भूलो पड्यो छुं;
चौद-लोक-निवास चपला-कान्त ! आ तक चूकशो मा । १
ओथ ईश्वर आपनी, साधन विषे समजुं नही हुं ;
प्राणपालक ! पोत जोई, शंख आखर फूंकशो मा । २
मात तात सगां सहोदर, जे कहुं ते आप मारे ;
हे कृपामृतना सरोवर ! दास सारू सुकशो मा । ३
शरण केशवलालनुं छे, चरण हे हरि राम तारुं;
अखिलनायक ! आ समय, खोटे मशे पण खूटशो मा । ४

रुडी सवार सज थजो

रुडी सवार सज थजो,
उठी अहुर मझद भजो
करी भजन मगन थजो
सदा सज्जन थजो ।

सहुनो सर्जनार नेकीनो बक्षनार
परवर देगार एक छे सर्वपणा अनेक छे
तु नामथी अनेक छे
परंतु एक छे ।

- रुडी सवार

भजी ले ने किरतार

प्राणिया ! भजी ले ने किरतार
आ तो स्वप्नुं छे संसार.
धन-दोलत ने माल-खजाना
पुत्र अने परविार,
ते तो तजीने तुं जइश एकलो,
खाईश जमनो मार रे - प्राणिया
उँची मेडी ने अजब झरुखा,
गोख तणो नहि पार
लक्षपति तो चाल्या गया,
एना बांध्या रह्या घरबार रे - प्राणिया
उपर फरेरा फरफरे ने
हेठळ श्रीफळ चार,
ठीक करीने ठाठडीमां घाल्यो

पछे वांसे पडे पोकार रे --प्राणिया
सेज तळायु विना सूतो नहि
ने करतो हुन्नर हजार,
खोळी खोळीने तने बाळशे
जेम लोंढुं गाळे लुहार रे -- प्राणिया
स्मशान जईने चेह खडकीने
माथे छे काष्टनो भार,
अग्नि मेलीने उभा रह्यां,
अने निश्चय झरे अंगार रे - प्राणिया
स्नान करीने चाली नीकळ्यां
नर अने वळी नार
भोजो भगत के दश दी रोईने,
पछे मेल्या छे विसार रे - प्राणिया

म्हारे घर आवो

म्हारे घर आवो प्रीतम प्यारा ॥
तन मन घन सब भेट धरुंगी
भजन करुंगी तुम्हारा
तुम गुणवंत सुसाहिब कहिये
माँ में अवगुण सारा ॥ म्हारे घर
मैं निगुणी कुछ गुण नही जानूँ
तुम छो बगसणहारा
'मीरा' कहे प्रभू कबरे मिलोगे
तुम बिन नैन दुखारा ॥ म्हारे घर

अंतर मम जागो रे

अंतर मम जागोरे ! जागोरे ! जागोरे !
पुनित पुनित तव पद कमले
हे सुंदर सुचिर्मय प्रसन्न मम
नैन चित्त लागोरे ! लागोरे ! लागोरे ! ॥धृ.॥
आज सुख मधुमय छंद
कुंद कुसुमित गंध गंध
प्राणे ! प्राणे ! प्राणे !
हे नवनंदित तवपद रहन
लागोरे, लागोरे, लागोरे ॥१॥

* * *

तुमि बंधु, तुमि नाथ

तुमि बंधु, तुमि नाथ
निशिदिन तुमि आमार;
तुमि सुख, तुमि शान्ति,
तुमि हे अमृत पाथार ! धृ. ।
तुमियि तो आनन्दलोक,
जुडाओ प्राण, नाशो शोक;
तापहरण तोमार चरण,
असीम शरण दीनजनार । तुमि ।

* * *

देह जावो अथवा राहो

देह जावो अथवा राहो
पांडुरंगी दृढ भावो ।
चरण न सोडी सर्वथा
आण तुझी पंढरीनाथा ।
वदनी तुझे मंगल नाम
हृदयी अखंडित प्रेम ।
नामा म्हणे केशवराजा
केला पण चालवि माझा ।

* * *

नाही संतपण मिळत तें हाटी

नाही संतपण मिळत हे हाटीं
हिंडतां कपाटीं रानीं वनीं।

नये मोल देता धनाचिया राशी
नाहीं तें आकाशीं पाताळीं ते।

तुका म्हणे मिळे जिवाचिये साटीं
नाही तरी गोष्टी बोलों नयें॥

* * *

पुण्य पर - उपकार, पाप तें पर - पीडा

पुण्य पर - उपकार, पाप ते पर - पीडा,
आणिक नाही जोडा दुजा यासी।
सत्य तोचि धर्म, असत्य तें कर्म,
आणिक हें वर्म नाहीं दुजें।
गति तेचि मुखीं नामाचे स्मरण,
अधोगति जाण विन्मुखता।
संतांचा संग तोचि स्वर्गवास,
नर्क तो उदास अनर्गळ।
तुका म्हणे उघडे आहे हित घात
जया जे उचित करा तैसे॥

* * *

अन्तर मम विकसित करो अन्तरतर हे !

अन्तर मम विकसित करो अन्तरतर हे !
निर्मल करो, उज्ज्वल करो, सुंदर करो हे - अन्तर
जागृत करो, उद्यत करो, निर्भय करो हे,
मंगल करो, निरलस नि:संशय करो हे - अन्तर
युक्त करो हे सबार संगे, मुक्त करो हे बंध,
संचार करो सकल कर्मे शान्त तोमार छंद - अन्तर
चरण-पद्मे मम चित्त निष्पंद करो हे,
नंदित करो, नंदित करो, नंदित करो है - अन्तर

* * *

अशो जरथोश्तनी सिफत

सरस सहुथी खरो रहबर, अशो जरथोश्त पयगम्बर;
दरुद तारां रवान् उपर, अशो जरथोश्त पयगम्बर।
अमारी दाद तें लीधी, तजावी तें बदी दीधी;
उतारी नेक राहोंपर, अशो जरथोश्त पयगम्बर २
जगतने काज तें दु:खने, लीधुं माथे तजी सुखने;
कीधो दु:खनो दिले नहि डर, अशो जरथोश्त पयगम्बर ३
लडाई तुं लड्यो सतनी, अहुरमजदी महोबतनी;
मूकी मालो महेलो जर, अशो जरथोश्त पयगम्बर ४
खुदानी राहपर चाली, अशोइने सदा पाळी;
सदा राजी कीधो परवर, अशो जरथोंश्त पयगम्बर ५
बदी, अज्ञान अंधारुं, कीधुं तें जहानथी न्यारुं;
भलो तुं नेक तालेवर, अशो जरथोश्त परगम्बर ६
पढी सहु आफरिन लाखो, फिदा जानो करी नाखो;
सदा तुं रेहनूमाई कर, अशो जरथोश्त पयगम्बर ७
भले दादार तें स्थाप्यो, जनम जरथोश्तेने आप्यो;
खूल्युं जेथी सुखोनुं घर, अशों जरथोश्त पयगम्बर ८

The Royal Cult Of Raj Yoga

Hold your head high, stand erect, walk with grace and dignity, be well poised, and softspoken. For, you are the Prince and an Heir to a Great Kingdom; so awake, arise and know your true worth.

You have been sent to this world so that you may see, know and understand the working of the entire creation, So be in the world, but do not be of the world. Attend to the task you are ordained to with the dignity of a Prince. Remember, your work does not lend dignity to you but you can lend dignity to your work; for there have been beggars that have begged with the dignity of a Prince and there have been Kings who have lived like beggars.

Walk the way of life with the serene tranquility of the sage. For, wisdom lies not in knowing many things, but in imbibing the simple truths of life.

Fear not, no harm shall come to you. For, the emissaries of the Kingdom are watching over you; But cowards die before their death, and those who have

faith shall have more, but those who haven't shall lose what little, they have. "Nothing venture, nothing gain", so go about your life with Truth and Courage. Truth sustains all creation, truth upholds the world. The man of truth is a brave man, for he has nothing to fear, but the man of the evil lie who cheats, lives in fear of being found out. He may fool every one, but how shall he escape the hand of God, and the Judgement day ?

Do not be apprehensive of the future, for that which has brought you so far so well, will take you further just as well.

To err is human, the only evil in this world is not to admit our misdeeds and repent for them.

You are the Prince. Let your mind rule over matter "Lift your mind off the mire and turn your soul to the vault of Fire". Do not be deluded by the things of the world, but learn to see everything in their true perspective. Cultivate a Contemplative and a Meditative frame of mind. Have a clear vision and adopt right

attitudes. Be observant and impartial in your Judgement and you shall not go very wrong for very long. For, you will soon find out that the things of the world call us but lead us nowhere. They only serve to torment and tantalise us; for, there is no conclusive finality in any of them individually or collectively. Then you will know that the seat of all experiences good or bad is within us. Life springs from within and derives not from without. So nothing can add to it or take away from it, unless you allow it to !

Ye are the salt of the earth, if the salt has lost its savour then wherewith shall it be salted ?

Greater is He that is within you than that which is without.

How shall it profit a man to gain the whole world and to lose himself ?

Isn't life itself worth more than all these ?

So learn the true worth of life itself by befriending yourself. He who does not befriend himself is an enemy unto himself and others. And he who does not find

inner guidance shall perish miserably.

You are a Prince. Show the nobility of your heart. Be magnanimous and Charitable. Every time you gain something, give some of it to others. Do not try to extract the last drop from every thing and everybody. Live and let live. For, the person most despised of God is one who eats alone.

It has so happened that Princes have been caught in the meshes of life, and have been humiliated; but that does not mean that a Prince should lose his true dignity even to the point of death. Be humble, For, pride goeth before destruction.

"He that is low needs fear no fall.

He that is poor no pride

He that is humble shall ever

have God to be his guide."

Do not be mindful of your losses, or injustices that may be done to you; for nothing comes to you except through the will of God ! Have Faith "All that is

lost shall be restored, and all that is broken shall be mended".

Do not use harsh words to injure others. Do not speak out of turn, but speak only when you are spoken to.

Exercise your kingly prerogatives of compassion and kindliness. Rise above petty trifles. Forgive and forget; for, hatred is the greatest cancer of life.

Hate for hatred if returned, hate remains and strife ensues ! Love for hatred if returned, hate ceases and love ensues !

Above all, eschew ego. Do not allow your smaller self to rule over your greater self and you shall indeed inherit the Kingdom of your father and shall live for ever in perfect rhythm, in Peace, and Anand as a Prince should !

God is my help in every need

God does my every hunger feed

God walks besides me

Guides my way

To every moment, night, and day.

Amen !

* * *

LORD'S PRAYER

Our Father ! who art in Heaven. Hallowed be Thy name ! Thy Kingdom come ! Thy will be done on earth, as it is in Heaven.

Give us this day, our daily bread, and forgive us, our trespasses, as we forgive them, that trespass against us and lead us not unto temptation, but deliver us from evil !

Amen !

* * *

AFFIRMATION

To gain the reward of good deeds and to win forgiveness for my sins I perform righteous acts for the love of my soul, may all good deeds of all good men throughout the seven spheres get their share of blessings, wide as the earth, extensive as the rivers and exalted as the sun. May thou be Righteous and Long lived. May it come about as I entreat.

***

MY CREDO

I am only one; but I am ONE

I can't do everything,

but I can do SOMETHING.

What I CAN do, I ought to do;

by the grace of GOD,

I will do !

I BELIEVE

GOD'S LOVE is shining in my body.

God's wisdom guides my mind.

God's peace fills me with poise.

GOD'S STRENGTH is ever at my call.

GOD'S PRESENCE goes with me.

***

A PRAYER (1)

(before the School Session Starts)

O Almighty Lord !

Let us start our day with a meditative frame of mind

Let us learn in such a manner that we do not forget what we learn.

Let our learning be meaningful.

Let our learning be useful in future; so as to make us the instrument to spread.

thy wisdom, thy love and thy peace !

Amen !

* * *

PRAYER BEFORE THE DISPERSAL OF ASSEMBLY !

THE LIGHT of GOD surrounds me.

THE LOVE of GOD enfolds me.

THE POWER of GOD protects me.

THE PRESENCE of GOD watches over me.

Wherever I am, GOD is.

A PRAYER (2)

Lord, behold our family here assembled. We thank Thee for this place in which we dwell; for the love that unites us; for the peace accorded us this day; for the hope with which we expect the morrow; for the health, the work, the food, and the bright skies, that make our lives delightful. Let peace abound in all our company. Purge out of every heart the lurking grudge. Give us grace and strength to forbear and to persevere. Offenders ourselves, give us the grace to accept and forgive offenders. Forgetful ourselves, help us to bear cheerfully the forgetfulness of others. Give us courage and gaiety, and the quiet mind. Spare to us our friends, soften to us our enemies. Give us the strength to encounter that which is to come, that we may be brave in peril, constant in tribulation, temperate in wrath and in all changes of fortune, and down to the gates of death, loyal and loving one to another.

Dear God ! Bless my dear father and mother.

They take care of me for Thee

Thou hast given me to them
But I still belong to Thee
Bless them for their own sake
Bless them for their love for me
Give them happiness,
Give them every Grace.
Amen !

Sun and Mood and Stars and Sky
All that walk and swim and fly
Ants and elephants, great and small
God is maker of them all
Mountains, valleys, rivers, seas,
Fountains, fruits and shrubs and trees,
Summer, Winter Autumn spring
He is the lord of everything.

सारे जहाँसे अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा

सारे जहाँसे अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा
हम बुलबुलें है उसकी वह बोस्ताँ हमारा ॥धृ.॥
गुरबतमें हों अगर हम, रहता है दिल वतनमें
समझो वहीं हमें भी, दिल हो जहाँ हमारा ॥१॥
परबत वह सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँका
वह संतरी हमारा, वह पासबाँ हमारा ॥२॥
गोदीमे खेलती है, जिसकी हजारो नदियाँ
गुलशन है जिनके दमसे, रश्के-जिनाँ हमारा ॥३॥
ऐ आबे - रुदे - गंगा, वह दिन है याद तुझको
उतरा तेरे किनारे, जब कारवाँ हमारा ॥४॥

मजहब नही सिखाता आपसमें बैर रखना
हिन्दी है हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा ॥५॥
युनानो मिस्त्रो रुमा, सब मिट गये जहाँ से
अबतक मगर है बाकी नामो निशाँ हमाराँ ॥६॥
कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नही हमारी
सदियो रहा है दुष्मन, दौरे जमाँ हमारा ॥७॥
इकबाल कोयी मरहम, अपना नही जहाँ में
मालूम क्या किसीको, दर्दे निहाँ हमारा ॥५॥

* * *

देश हमारा

देश हमारा, देश हमारा, देश हमारा
देश हमारा, निर्मल सुंदर उज्वल गगन का तारा २
जिसके बल पर मानवताने अपना शीश उभारा २
देश हमारा देश हमारा, देश हमारा
महागुणी, महाजती, महाबली विशाल है २
जो मित्रपर निहाल है जो शत्रुको कराल है २
विक्रांत भी है शान्त भी है गंग जिसके भाल है २
हिमालय पग जमाये जिसका अटल द्वारपाल है २
इसको अर्पण कर दे अपना हम तन मन धन सारा २
जिसके बल पर मानवताने अपना शीश उभारा २
देश हमारा, देश हमारा, देश हमारा
देश हमारा, निर्मल सुंदर उज्वल गगन का तारा २

जिसके बल पर मानवताने अपना शीश उभारा २
देश हमारा, देश हमारा, देश हमारा
हर एक कणपे इस धराके आज हमको मान है २
प्रतीक है पवित्रता का ज्ञान का यह मान है २
टागोर का वतन है ये, गांधीका जहान है २
प्रणाम है प्रणाम है, ये अपना हिंदुस्थान है २
प्यार से इसके सजल हुई है अपनी जीवन धारा २
जिसके बल पर मानवताने अपना शीश उभारा २
देश हमारा, देश हमारा, देश हमारा
देश हमारा निर्मल सुंदर उज्वल गगन का तारा २
जिसके बल पर मानवताने अपना शीश उभारा २
देश हमारा, देश हमारा, देश हमारा

* * *